आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बेंगलोर**
प्रथम संस्करण अक्तूबर 2011

अनुवाद एवं प्रूफ रीडिंग : डॉर्थी. शरदकन्त वाघमारे
मुखपृष्ठ एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : करुणा जेरोम, बाईफेथ डिज़ाइन्स

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु
इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - Fulfilling God's Purposes for your Life)

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना

विषयसूचि

परिचय			1
1.	**यह समझना कि परमेश्वर के पास आपके जीवन के लिए एक उद्देश्य है**		**3**
	1.1	परमेश्वर योजना, उद्देश्य, परिकल्पना और लक्ष्य का परमेश्वर है	3
	1.2	परमेश्वर के पास एक उद्देश्य है —'सामान्य उद्देश्य' या 'मास्टर प्लान; जो वह इस पथ्वी पर आज पूरा कर रहा है	3
	1.3	परमेश्वर के पास आपके लिए एक उद्देश्य है — 'एक विशिष्ट योजना	4
	1.4	हमारे लिए परमेश्वर की योजना हमेशा भली होती है!	7
	1.5	परमेश्वर की योजना को पूरा करने हेतु हमें उसके साथ सहयोग करना है	7
	1.6	हमें अपने जीवनों के लिए परमेश्वर की योजना खोजना और उसका अनुसरण करना है	8
	1.7	परमेश्वर की योजना और उद्देश्य को पूरा करने हेतु परमेश्वर आपको तैयार करेगा	9

1.8 हम गलतियां कर सकते हैं – परंतु हमारी असफलताओं पर विजय पाने में और उसकी बुलाहट को पूरा करने में परमेश्वर हमारी सहायता कर सकता है 9

1.9 परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने से हमें रोकने का शैतान हर तरह प्रयास करेगा 10

1.10 हमें परमेश्वर की बुलाहट पर अपना ध्यान लगाए रहना है 11

1.11 हममें धीरज होना चाहिए 11

2. आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना 12

2.1 परमेश्वर के वचन की आम शिक्षा और निर्देश को पहचानें 15

2.2 आपके जीवन के 'बीजों' को पहचानें 19

2.3 अपने अंदर की सरगर्मी को पहचानें 20

2.4 परमेश्वर द्वारा आपको जो अनुग्रह दिया गया है उसे पहचानें 22

2.4.1 नए नियम में 'अनुग्रह' शब्द दर्शाता है 22

2.4.1.1 ईश्वरीय अनुग्रह 22

2.4.1.2 ईश्वरीय चरित्र 22

2.4.1.3 ईश्वरीय समर्थता 22

2.4.2 अनुग्रह और कार्य 24

2.5 परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई को पहचानें 25

2.5.1 पवित्र आत्मा हमसे किस प्रकार बातें करता है? 26

2.5.2 हम कैसे जान सकते हैं कि पवित्र आत्मा बोल रहा है 26

2.6 परिस्थितियों को पहचानें 26

2.7 ईश्वरीय परामर्श और बुद्धिमानी को पहचानें 29

2.7.1 व्यक्ति के अपने ज्ञान और अनुभव पर आधारित परामर्श 31

2.7.2 परमेश्वर के लिखित वचन पर आधारित परामर्श 31

2.7.3 भविष्यात्मक प्रेरणा पर आधारित परामर्श 31

2.8 समयों और ऋतुओं को पहचानें 32

2.9 परमेश्वर का कार्य करने का तरीका पहचानें 34

3. परमेश्वर की तैयारी की प्रक्रिया पहचानना 36

3.1 तैयारी की प्रक्रिया के द्वारा परमेश्वर क्या तैयारी करना चाहता है? 36

3.1.1 ईश्वरीय चरित्र 41

3.1.2 सभी बातों में परिपक्वता 42

3.2 परमेश्वर हमें कैसे तैयार करता है? 43

3.2.1 वचन 43

3.2.2 पवित्र आत्मा 43

3.2.3 अन्य लोगों द्वारा 44

3.2.4 जीवन के अनुभव 44

3.3 परमेश्वर की तैयारी की प्रक्रिया से गुज़रते समय समय ध्यान में रखने योग्य बातें 45

	3.3.1	तैयारी की प्रक्रिया के दौरान हमें परमेश्वर लिए तैयार रहना सीखना है	45
	3.3.2	आपका रवैया महत्वपूर्ण है	45
	3.3.3	जहां सामर्थ है, वहां पर संगतता है	45
	3.3.4	जब आप छोटी बातों में विश्वासयोग्य रहेंगे, तब परमेश्वर आपको अगली बातों के लिए बढ़ौतरी देगा	45
	3.3.5	आत्मसंतोष से सावधान रहें। परमेश्वर को अनुमति दें कि वह आपको बढ़ाए	46
	3.3.6	तैयारी का समय कभी बरबाद नहीं होता। जितनी बड़ी बुलाहट होती है, उतनी ही बड़ी तैयारी की आवश्यकता होती है	46
	3.3.7	जल्दबाजी न करें। तैयारी का समय पूरा होने दें	46
	3.3.8	बुलाहट और वरदान के आपके क्षेत्र में रहें	46
4.	उसके उद्‌देश्य को पूरा करने हेतु अपना स्थान लेना		47
4.1	उसका उद्‌देश्य पूरा करने हेतु अपना स्थान लेना		47
4.2	उसका प्रयोजन पाने हेतु अपना स्थान लेना		47
4.3	सुरक्षा पाने हेतु अपना स्थान लेना		48
4.4	उन्नति या बढ़ती पाने हेतु अपना स्थान लेना		49
4.5	परमेश्वर की वर्तमान बेदारी में रहने हेतु अपना स्थान लेना		49
4.6	जब आप अपना स्थान लेते हैं, तब निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखें		52

5.	ऊंची बुलाहट की कीमत	53
5.1	प्रति दिन के बलिदान	54
5.2	जीवन बलिदान	55
5.3	आत्मा की अगुवाई में किए गए बलिदान और शारीरिक बलिदान	55
6.	अपनी दौड़ पूरी करना	57
6.1	नियोजन	57
6.2	अंतिम रेखा तक दौड़ना	61

परिचय

1993 में परमेश्वर मेरे अंदर एक बोझ उण्डेलने लगा – हर विश्वासी को यह दिखाने का बोझ कि परमेश्वर के पास उसके जीवनों के लिए एक योजना, उद्देश्य, स्वप्न और मुकद्दर (भवितव्यता) है। पिछले वर्षों से मैंने यह सरल संदेश प्रचार करना और सिखाना जारी रखा है कि, "आपके जीवन के लिए परमेश्वर के पास एक उद्देश्य है।" व्यक्तिगत अध्ययन, अवलोकन तथा परमेश्वर के अन्य सेवकों के संदेशों को सुनने के द्वारा, मुझे इस बात की और समझ प्राप्त होने लगी कि परमेश्वर की योजना को कैसे पहचानें और परमेश्वर अपनी योजना को प्रगट करने और पूरा करने हेतु कैसे हमें जीवन में ले चलता है।

परमेश्वर के लोग किस प्रकार इस सत्य को अपने जीवन में ग्रहण करते हैं और किस प्रकार वे एक स्वर्गीय उद्देश्य के लिए अपना जीवन बिताते हैं यह देखना सचमुच अत्यंत आनंद की बात है। "ऑल पीपल्स चर्च में हर विश्वासी सेवक है"। हमारा बोझ विश्वासियों को परमेश्वर द्वारा नियुक्त सेवकाई में विश्वासियों को मुक्त करना और सुसज्जित करना है। आपकी सेवकाई में ऐसी बातें शामिल होंगी जिन्हें आप कलीसिया में और संसार में करते हैं – कारोबार में, खेलकूद में, शिक्षा क्षेत्र में, कला आदि में। आपके लिए परमेश्वर का उद्देश्य कलीसिया तक सीमित नहीं है।

आगे बढ़कर आपके जीवन के लिए परमेश्वर के स्वप्न को थाम लें! आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य के अनुसार जीने से बढ़कर जीने के लिए और कोई ऊंचा या बेहतर उद्देश्य नहीं है। स्वर्गीय बुलाहट का अनुसरण करने और पूरा करने के बराबर संतोष और किसी बात से प्राप्त नहीं हो सकता। परमेश्वर के साथ चलने और जिन बातों की योजना उसने आपके लिए बनाई है उन्हें पूरा करने से बढ़कर और कोई साहसिक कार्य नहीं है।

यह हमेशा ही आसान नहीं होगा। आपके मार्ग में पहाड़ होंगे जिन्हें आपको हटाना होगा, कुछ दुष्टात्माओं पर और लोगों पर भी जय पाना होगा जो आपके मार्ग में रुकावट ला सकते हैं! परंतु उसके साथ बने रहें और आप देखेंगे कि परमेश्वर का स्वप्न आपके लिए वास्तविकता बन जाएगा।

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के स्वप्न का अनुसरण करते समय अपनी इस यात्रा का आनंद उठाए।

1

यह समझना कि परमेश्वर के पास आपके जीवन के लिए एक उद्देश्य है

1.1 परमेश्वर योजना, उद्देश्य, परिकल्पना और लक्ष्य का परमेश्वर है

भजन 33:11

यहोवा की युक्ति सर्वदा स्थिर रहेगी, उसके मन की कल्पनाएं पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहेंगी।

परमेश्वर योजना, उद्देश्य, परिकल्पना और लक्ष्यों का परमेश्वर है। परमेश्चर मनमाने ढंग से कार्य नहीं करता।

प्रेरितों के काम 15:18

यह वही प्रभु कहता है जो जगत की उत्पत्ति से इन बातों का समाचार देता आया है।

यशायाह 46:10

मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूं जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूं, मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूंगा।

परमेश्वर आरंभ से अंत को जानता है। वह यात्रा के आरंभ में मंजिल को जानता है और यह जानता है कि वहां कैसे जाएं।

1.2 परमेश्वर के पास एक उद्देश्य है – 'सामान्य उद्देश्य' या 'मास्टर प्लान; जो वह इस पृथ्वी पर आज पूरा कर रहा है

इफिसियों 1:9–12

[9]कि उसने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था, [10]कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे। [11]उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर मीरास बने, [12]ताकि हम जिन्होंने पहले से मसीह पर आशा रखी थी, उसकी महिमा की स्तुति के कारण हों।

इफिसियों 3:11

उस सनातन मनसा के अनुसार, जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी।

एक सनातन उद्देश्य है जिसे परमेश्वर पृथ्वी पर प्रगट कर रहा और अमल में ला रहा है। इसे हम परमेश्वर का 'मास्टर प्लान' (प्रमुख योजना) कहते हैं जिसे वह आज पृथ्वी पर पूरा कर रहा है।

परमेश्वर का मास्टर प्लान लोगों को उद्धार में लाना है, ताकि वे सत्य के ज्ञान को प्राप्त करें और उसके पुत्र प्रभु यीशु मसीह की समानता को प्राप्त करें।

1 तीमुथियुस 2:3,4

[3]क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रम से है, और न अशुद्धता से, और न छल के साथ है, [4]परंतु जैसा परमेश्वर ने हमें योग्य ठहराकर सुसमाचार सौंपा, हम वैसा ही वर्णन करते हैं; और इसमें मनुष्यों को नहीं, परन्तु परमेश्वर को, जो हमारे मनों को जांचता है, प्रसन्न करते हैं।

1.3 परमेश्वर के पास आपके लिए एक उद्देश्य है – 'एक विशिष्ट योजना'

भजन 139:16

तेरी आंखों ने मेरे बेडौल तत्व को देखा; और मेरे सब अंग जो दिन दिन बनते जाते थे वे रचे जाने से पहले तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे।

भजन 139:16 (मेसेज बाइबल)

तेरी आंखों ने मेरे बेडौल तत्व को देखा; और मेरे सब अंग जो दिन दिन बनते जाते थे वे रचे जाने से पहले तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे।

एक खुली किताब के समान, तू ने मुझे गर्भधारण से जन्म के समय तक बढ़ते देखा; मेरे जीवन की सभी अवस्थाएं तेरे समक्ष खुली हुई थीं, मेरे एक दिन भी जीने से पहले मेरे जीवन के दिन तेरे सामने तैयार थे।

परमेश्वर के पास आपके जीवन की अन्तिम रूपरेखा (ब्लू प्रिन्ट) है। परमेश्वर के पास आपके जीवन के लिए स्वप्न है।

उसने एक उद्देश्य से आपको सिरजा है। उसने आपकी इसलिए कल्पना की ताकि आप उस उद्देश्य को पूरा करने योग्य बनें जो उसके मन में आपके लिए है।

फिलिप्पियों 3:12

यह मतलब नहीं कि मैं पा चुका हूं, या सिद्ध हो चुका हूं; परंतु उस पदार्थ को पकड़ने के लिए दौड़ा चला जाता हूं जिसके लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था।

यहां पर 'जिसके लिए' है जिसके लिए मसीह यीशु ने आपको पकड़ा है। आपके लिए उसके पास एक योजना है, उद्देश्य है!

इफिसियों 2:20

और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो।

कुछ ‘भले काम’ हैं जिन्हें परमेश्वर ने आपके लिए पहले से तैयार किया है कि आप उन्हें पृथ्वी पर पूरा करें।

कुछ स्थान हैं जहां पर परमेश्वर चाहता है कि आप जाएं; कुछ लोग हैं जिनके जीवनों को आप छूएं; कुछ जीवनों को आप प्रभावित करें; कुछ कामों को आप पूरा करें; शहरों को बदलें, राष्ट्रों को हिलाकर रख दें!

जीवन जीना आसान है – परमेश्वर ने आपके जीवन के लिए क्या योजना बनाई है, उसे जानें और उसमें चलें!

परमेश्वर ने आपको “अपनी मनसा के अनुसार” बुलाया है। आपको उसके उद्देश्यों को पूरा करने हेतु परमेश्वर के साथ भागी होने के लिए बुलाया गया है। यह एक अद्भुत सत्य है। हम अपने उद्देश्य के लिए नहीं जी रहे हैं – परंतु एक उच्च उद्देश्य के लिए – “उसके उद्देश्य या मनसा के लिए!”

उसके उद्देश्य के साथ, उस उद्देश्य को पूरा करने हेतु उसका अनुग्रह आता है। उसकी ईश्वरीय बुलाहट के साथ वह हमेशा हमें ईश्वरीय अधिकार प्रदान करता है। उसका उद्देश्य और अनुग्रह हमें “मसीह यीशु में” दिया गया है। केवल जब हम मसीह के पास आते हैं, तब हम उसके उद्देश्यों को पूरा करने में परमेश्वर के साथ भागी होने की स्थिति में रहते हैं।

हमारे लिए परमेश्वर की विशिष्ट योजना उसके मास्टर प्लान का एक भाग है। जब आप आपके जीवन के लिए परमेश्वर के विशिष्ट उद्देश्य को पूरा करने का प्रयास करेंगे, तब आप पृथ्वी पर परमेश्वर के सामान्य उद्देश्य को पूरा करने में सहायक बनेंगे।

1.4 हमारे लिए परमेश्वर की योजना हमेशा भली होती है!

यिर्मयाह 29:11

क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाएं मैं तुम्हारे विषय करता हूं उन्हें मैं जानता हूं, वे हानि की नहीं, वरन कुशल ही की हैं, और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूंगा।

रोमियों 8:28

और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।

आपके मन में यह अविचल भरोसा रखें। आपके लिए परमेश्वर की योजना भली है!

परमेश्वर आपकी ओर है, आपके विरोध में नहीं है। आपके लिए उसकी योजनाएं हमेशा भलाई की – आपके 'शालोम' (कल्याण, स्वास्थ्य, समृद्धी, सफलता, शांति) हैं। आपके लिए परमेश्वर की योजना से बेहतर कुछ नहीं है!

1.5 परमेश्वर की योजना को पूरा करने हेतु हमें उसके साथ सहयोग करना है

1 कुरिन्थियों 3:9

क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो।

हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की योजना का पूरा होना स्वतः नहीं होता। हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की योजना को पूरा करने हेतु हमें परमेश्वर के साथ सहयोग करना है। हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की योजना और उद्देश्य का पूरा होना हम पर निर्भर है। कुछ

लोग कभी परमेश्वर की योजना के अनुसार कार्य करना आरम्भ नहीं करते। कुछ लोग उसकी योजना का मात्र एक छोटा प्रतिशत पूरा करते हैं। बाइबल कहती है कि प्रेरित पौलुस ने "अपनी दौड़ पूरी की।"

परमेश्वर स्वर्ग में उसकी इच्छा प्रकट करता है। परंतु वह पृथ्वी पर उसे पूरा करने हेतु उसके लोगों की ओर देखता है।

1.6 हमें अपने जीवनों के लिए परमेश्वर की योजना खोजना और उसका अनुसरण करना है

ज़रूरी नहीं है कि हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की योजना और उद्देश्य रहस्य हो!

कुछ लोगों की यह राय है कि परमेश्वर की इच्छा इतनी रहस्यमय है कि हम उसे जान नहीं सकते! यह पूर्ण रूप से असत्य है!

परमेश्वर अपनी इच्छा को प्रकट करने के लिए – हमारे जीवनों के लिए उसकी योजना और उद्देश्य को प्रकट करने के लिए इच्छुक है – यदि हम उसके लिए उसकी खोज में लगे रहने के लिए तैयार हैं तो।

हम उन नौ 'मार्गदर्शक स्तम्भों' के वि ाय में सीखेंगे जो हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर के मार्गदर्शन और निर्देश को पहचानने में हमारी सहायता करेंगे।

- परमेश्वर के वचन की आम शिक्षा और निर्देश पहचानना
- आपके जीवन के 'बीजों' को पहचानना
- अपने भीतर की सरगर्मी को पहचानना
- आपको दी गई परमेश्वर की कृपा को पहचानना
- परिस्थितियों को पहचानना

- परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई को पहचानना
- ईश्वरीय बुद्धि और परामर्श को पहचानना
- समय और सुअवसरों को पहचानना
- परमेश्वर का आपके जीवन में कार्य करने का तरीका पहचानना

1.7 परमेश्वर की योजना और उद्देश्य को पूरा करने हेतु परमेश्वर आपको तैयार करेगा

आपकी तैयारी जितनी परिपूर्ण होगी, उतनी ही आपकी सफलता संभवनीय होगी।

तैयारी का समय कभी बर्बाद नहीं होता।

बुलाहट जितनी बड़ी होगी, उतनी बड़ी तैयारी आवश्यक है।

1.8 हम गलतियां कर सकते हैं – परंतु हमारी असफलताओं पर विजय पाने में और उसकी बुलाहट को पूरा करने में परमेश्वर हमारी सहायता कर सकता है

जिस कमज़ोरी पर आप विजय नहीं पा सकते उसे शैतान आपके विरोध में इस्तेमाल करेगा।

परमेश्वर समय से बड़ा है। परमेश्वर हमारी गलतियों से बड़ा है।

2 तीमुथियुस 4:6–8

[4]और अपने कान सत्य से फेरकर कथा–कहानियों पर लगाएंगे। [5]परंतु तू सब बातों में सावधान रह, दुख उठा, सुसमाचार प्रचार का काम कर और अपनी सेवा को पूरा कर। [6]क्योंकि अब मैं अर्घ के समान उंडेला जाता हूं, और मेरे कूच का समय आ पहुंचा है।

प्रेरित पौलुस करीब पैतीस वर्ष की उम्र में प्रभु यीशु के पास आया, फिर भी उसने कहा कि उसने अपनी दौड़ पूरी की है। परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने के लिए उम्र बाधा नहीं बनती।

2 तीमुथियुस 1:9

जिसने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं, परंतु अपनी मनसा और उस अनुग्रह के अनुसार है, जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है।

परमेश्वर सिद्ध पात्रों को नहीं खोज रहा है। वह समर्पित पात्रों को ढूंढ़ रहा है।

2 कुरिन्थियों 4:7

परन्तु हमारे पास यह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है, कि यह असीम सामर्थ हमारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर ही की ओर से ठहरे।

यह हमारे द्वारा कार्य करने वाली परमेश्वर की सामर्थ है। हम मिट्टी के बर्तन हैं।

1.9 परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने से शैतान हमें रोकने का हर तरह प्रयास करेगा

परमेश्वर द्वारा दिया गया स्वप्न हमेशा दुष्टात्माओं के विरोध का सामना करेगा।

विलम्ब हमेशा परमेश्वर की ओर से नहीं होते (दानिय्येल 10:2–14)। शैतान आपके आश्चर्यकर्मों में विलम्ब करने का प्रयास करता है और इस प्रकार परमेश्वर की सर्वोच्च और सर्वोत्तम योजना तक पहुंचने में आपकी इच्छा को निर्बल कर देता है।

1.10 हमें परमेश्वर की बुलाहट पर अपना ध्यान लगाए रहना है

विकर्षण या ध्यान बंट जाना – जब हमारा ध्यान बिखर जाता है, तो इसका परिणाम हमारा समय और शक्ति बर्बाद हो जाती है। परमेश्वर ने कहा, "न तो दाहिनी ओर मुड़ना, और न बाई ओर; अपने पांव को बुराई के मार्ग पर चलने से हटा ले" (नीतिवचन 4:27)।

1.11 हममें धीरज होना चाहिए

विजय का स्वाद आपके संघर्ष से परे बना रहता है (माईक मर्डोक)।

आपका धीरज शैतान के मनोबल को कमज़ोर कर देता है (माईक मर्डोक)।

2

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना

इफिसियों 5:15–17

[15]इसलिए ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियों के समान नहीं, पर बुद्धिमानों के समान चलो। [16]और अवसर को बहुमूल्य समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं। [17]इस कारण निर्बुद्धि न हो, परंतु ध्यान से समझो, कि प्रभु की इच्छा क्या है?

पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि हम प्रभु की इच्छा को समझें (मानसिक तौर पर समझें)

हम समझ सकते हैं कि प्रभु की इच्छा क्या है!

कुलुस्सियों 1:9–11

[9]इसी लिए जिस दिन से यह सुना है, हम भी तुम्हारे लिए यह प्रार्थना करने और बिनती करने से नहीं चूकते कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहचान में परिपूर्ण हो जाओ, [10]ताकि तुम्हारा चाल–चलन प्रभु के योग्य हो, और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो, और तुममें हर प्रकार के भले कामों का फल लगे, और तुम परमेश्वर की पहचान में बढ़ते जाओ, [11]और उसकी महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ से बलवन्त होते जाओ, यहां तक कि आनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सको।

उसकी इच्छा के ज्ञान से परिपूर्ण होना संभव है। हम में से किसी को भी हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा के संबंध में “अंधकार में रहने” की ज़रूरत नहीं है।

उसकी इच्छा जानने के लिए बुद्धि और आत्मिक समझ की आवश्यकता है।

उसकी इच्छा जानने के बाद हम :

- उसके योग्य चाल चल सकते हैं
- उसे प्रसन्न करने वाला जीवन बिता सकते हैं
- हर भले काम में सफल हो सकते हैं
- उसके ज्ञान में बढ़ सकते हैं

1 कुरिन्थियों 2:9,10
9परन्तु जैसा लिखा है कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुनी, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं। 10परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है।

परमेश्वर ने उसके लोग होने के नाते और व्यक्तियों के रूप में हमारे लिए कुछ बातों की योजना की है। पवित्र आत्मा उन्हें हम पर प्रकट करता है।

1 कुरिन्थियों 2:16
क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है कि उसे सिखलाए? परन्तु हममें मसीह का मन है।

आत्मा के प्रकट करने वाले कार्य की वजह से हम में मसीह का मन है। हम मसीह के विचार, योजना और उद्देश्य को जानते हैं।

आपके जीवन के लिए परमेश्वर की योजना और उद्देश्य को आप यथार्थ रूप से, पूर्ण रूप से और स्पष्ट रूप से जान सकते हैं।

आपको अंधे व्यक्ति के समान जीवन में टटोलते हुए चलने की ज़रूरत नहीं है, जो कि परमेश्वर की योजना और उद्देश्य से पूर्ण रूप से अपरिचित हो। आप प्रभु की इच्छा समझ सकते हैं। आप उसकी इच्छा के ज्ञान से भर सकते हैं। जिन बातों को उसने आपके लिए तैयार किया है, उन्हें आप जान सकते हैं। आप "मसीह के मन" अनुसार चल सकते हैं।

नीतिवचन 4:18
परन्तु धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है, जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिक अधिक बढ़ता रहता है।

कई मामलों में, हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की योजना और उद्देश्य का प्रकाशन क्रमिक होता है।

इब्रानियों 11:8
विश्वास ही से इब्राहीम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया, जिसे मीरास में लेनेवाला था, और यह न जानता था कि मैं किधर जाता हूं; तौभी निकल गया।

जो कदम आप बढ़ाएं ऐसा वह चाहता है, उसमें जब आप परमेश्वर की आज्ञा को मानेंगे, तब सही समय पर वह अगला कदम आप पर प्रकट करेगा।

उत्पत्ति 24:27
धन्य है मेरे स्वामी इब्राहीम का परमेश्वर यहोवा, कि उसने अपनी करुणा और सच्चाई को मेरे स्वामी पर से हटा नहीं लियाः यहोवा ने मुझको ठीक मार्ग पर चलाकर मेरे स्वामी के भाईबन्धुओं के घर पर पहुंचा दिया है।

जब हम मार्ग पर आगे बढ़ते हैं – जिस दिशा में परमेश्वर हमें ले जाना चाहता है, उसमें जब हम बढ़ते हैं – तब प्रभु हमें उसकी योजना और उद्देश्य में और आगे ले चलता है।

हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की योजना और उद्देश्य को हम कैसे पहचान सकते हैं? हम नौ मार्गदर्शक तत्वों की चर्चा करेंगे जो हमारे लिए सहायक होंगे।

विभिन्न समयों में परमेश्वर इनमें से एक या दो मार्गदर्शक तत्वों का उपयोग करेगा ताकि वह आपको मार्ग दिखाए जिसमें वह चाहता है कि आप चलें।

- परमेश्वर के वचन की आम शिक्षा और निर्देश को पहचानना
- आपके जीवन के 'बीजों' को पहचानना
- अपने भीतर की सरगर्मी को पहचानना
- आपको दी गई परमेश्वर की कृपा को पहचानना
- परिस्थितियों को पहचानना
- परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई को पहचानना
- ईश्वरीय बुद्धि और परामर्श को पहचानना
- समय और सुअवसरों को पहचानना
- परमेश्वर के आपके जीवन में कार्य करने के तरीके को पहचानना

2.1 परमेश्वर के वचन की आम शिक्षा और निर्देश को पहचानें

2 तीमुथियुस 3:16,17

16हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। 17ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।

हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की अगुवाई और निर्देश हमेशा परमेश्वर के लिखित वचन के अनुसार होंगे।

रोमियों 12:2

और इस संसार के सदृश न बनो, परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।

'मालूम करते रहो' *dokimazo* (यूनानी) का अर्थ है परखना।

dokimazo यह शब्द आम तौर पर धातुओं की जांच करने की प्रक्रिया, उन्हें आग में जांचने की प्रक्रिया आदि बातों के लिए लागू होता है। इसलिए इसका अर्थ खोजना, सोच विचार करना, सुनिश्चित करना भी होता है। यहां पर इसका अर्थ यही है। अर्थ यह है कि परमेश्वर की इच्छा को सफलतापूर्वक जान लेने के लिए नविनीकरण प्राप्त बुद्धि आवश्यक है।

मन का नविनीकरण मेरे लिए यह साबित करने हेतु आवश्यक है कि परमेश्वर के सामने क्या भला, स्वीकारणीय और सिद्ध है।

यह पद नहीं सिखाता कि परमेश्वर की इच्छा की तीन विभिन्न श्रेणियां हैं। या तो उसकी इच्छा होगी या न होगी। परमेश्वर की इच्छा हमेशा भली, ग्रहणयोग्य और सिद्ध होती है।

भली का अर्थ है उत्तम, सरल, आदरयोग्य।

ग्रहणयोग्य का अर्थ है पूर्णरूप से अनुकूल, जो परमेश्वर को प्रसन्नतादायक होगी या जिसे वह पसंद करेगा।

सिद्ध का अर्थ है पूर्ण, जिसमें कोई दोष या कमी नहीं है।

जो चीज़ भली, भावती और सिद्ध है, वही उसकी इच्छा है।

नविनीकरण प्राप्त बुद्धि तुरंत परखती है (विश्लेषण करती है, साबित करती है, पहचानती है) कि कोई बात भली, ग्रहणयोग्य और सिद्ध है

या नहीं और उसके द्वारा यह निर्धारित करती है कि वह परमेश्वर की इच्छा है या नहीं।

इफिसियों 5:10 'परखना' *dokimazo* (यूनानी) का अर्थ है जांचना।

कोई बात परमेश्वर के लिए प्रसन्न करने योग्य है या नहीं उसे देखने के लिए जो मुख्य जांच या कसौटी का हम उपयोग करते हैं, वह है – क्या वह परमेश्वर के वचन के अनुसार है।

इब्रानियों 5:14
परंतु अन्न सयानों के लिए है, जिनके ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास करते करते, भले बुरे में भेद करने के लिए पक्के हो गए हैं।

परमेश्वर के वचन के निरंतर उपयोग के द्वारा आप अपने इंद्रियों (अंगों) को प्रशिक्षित कर सकते हैं कि वे भले और बुरे के बीच फर्क कर सकें और इस फर्क को सरलता से पहचान सकें।

इसलिए निरंतर परमेश्वर के वचन को पढ़ना और परमेश्वर के वचन को हमारे जीवनों का महत्वपूर्ण भाग बनाना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

व्यवहारिक उदाहरण

विवाह

उत्पत्ति 2:24
इस कारण पुरुष अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक ही तन बनें रहेंगे।

2 कुरिन्थियों 6:14,15
14अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल जोल? या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति?
15और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता?

आमोस 3:3

यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हों, तो क्या वे एक संग चल सकेंगे?

परमेश्वर की इच्छा यह है कि आप विश्वासी से विवाह करें।

तलाक

मलाकी 2:16

क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, कि मैं स्त्री–त्याग से घृणा करता हूं, और उससे भी जो अपने वस्त्र को उपद्रव से ढांपता है। इसलिये तुम अपनी आत्मा के विषय में चौकस रहो और विश्वासघात मत करो, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।

परमेश्वर को तलाक पसंद नहीं है।

अधर्म के काम

इफिसियों 4:28

चोरी करनेवाला फिर चोरी न करे; वरन भले काम करने में अपने हाथों से परिश्रम करे; इसलिए कि जिसे आवश्यकता हो, उसे देने को उसके पास कुछ हो।

भजन 23:3

वह मेरी जी में जी ले आता है। धर्म के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है।

परमेश्वर कभी 'भले काम करने के लिए' पाप करने हेतु आपकी अगुवाई नहीं करेगा।

2.2 आपके जीवन के 'बीजों' को पहचानें

मरकुस 4:26–32

[26]फिर उसने कहा, "परमेश्वर का राज्य ऐसा है, जैसे कोई मनुष्य भूमि पर बीज छींटे। [27]"और वह रात को सो जाता है और दिन को जागता है; और वह बीज ऐसे उगता है और बढ़ता है कि वह नहीं जानता। [28]पृथ्वी आप ही फल लाती है, पहले अंकुर, तब बाल, और तब बालों में तैयार दाना। [29]"परन्तु जब दाना पक जाता है, तब वह तुरन्त हंसिया लगाता है, क्योंकि कटनी आ पहुंची है। [30]फिर उसने कहा, "हम परमेश्वर के राज्य की उपमा किस से दें, और किस दृष्टान्त से उसका वर्णन करें? [31]"वह राई के दाने के समान है, कि जब भूमि में बोया जाता है तो भूमि के सब बीजों से छोटा होता है। [32]"परन्तु जब बोया गया, तो उगकर सब साग–पात से बड़ा हो जाता है और उसकी ऐसी बड़ी डालियां निकलती है कि आकाश के पक्षी उसकी छाया में बसेरा कर सकते हैं।"

परमेश्वर अपने "बीज सिद्धांत" के अनुसार कार्य करता है।

हम "बीज" शब्द का उपयोग उन बातों का उल्लेख करने हेतु करते हैं जिन्हें बचपन में ही आपके जीवन में बोया गया है – जो बाद में आपके द्वारा किए जाने वाले कई निर्णयों और चुनावों को प्रभावित करने लगे।

'बीज' विशेष गुणों या अभिरुचियों को बचपन में ही पहचान लेना हो सकता है। वे कुछ विशेष अवसर हो सकते हैं जो जीवन की प्रारंभिक अवस्था में आपके मार्ग में आए। बाकी 'बीजों में' विशेष संपर्क (जिन लोगों को परमेश्वर आपके जीवन में लाता है), स्वप्न, भविष्यद्वाणी का शब्द आदि बातों का समावेश हो सकता है।

उदाहरण :

यूसुफ – बचपन में यूसुफ ने स्वप्न देखे जो इस बात का संकेत थे कि भविष्य में क्या होगा (उत्पत्ति 37)।

मूसा – परमेश्वर ने अलौकिक रीति से मूसा के लिए यह प्रबंध किया कि उसे फिरौन के महल में सिखाया और प्रशिक्षित किया जाए। मूसा के जीवन में यह परमेश्वर के 'आत्मिक मुकद्दर (भवितव्यता) का बीज' था (प्रेरितों के काम 7:22)।

दाऊद – भविष्यद्वक्ता शमूएल ने बचपन में ही दाऊद का अभिषेक किया (1 शमूएल 16:13)। बचपन में ही, दाऊद को एक कुशल संगीतकार, बलवान योद्धा, अपने मार्गो में बुद्धिमान और सुंदर व्यक्ति के रूप में पहचाना गया (1 शमूएल 16:18)। इन 'बीजों' ने जो कुछ दाऊद बना और जो उसने अपने जीवन में पूरा किया, उसके अनुरूप दाऊद को ढाला।

एस्तेर – एस्तेर की सुंदरता उसका 'बीज' था जिसने उसे रानी बनने की योग्यता प्रदान की। यहूदी लोगों के लिए इस बीज ने उसे एक प्रभावशाली महिला का स्थान प्रदान किया।

आपके जीवन में 'आत्मिक मुकद्दर (भवितव्यता) के बीजों' को पहचानें।

आपके जीवन के बीज परमेश्वर की योजना, उद्देश्य और अभिदिशा के संबंध में आपको संदेश दे रहे हैं।

2.3 अपने अंदर की सरगर्मी को पहचानें

नहेम्याह 1:1–4

1हकल्याह के पुत्र नहेमायाह के वचन। बीसवे वर्ष के किसलवे नाम महीने मे, जब मै शूशन नाम राजगढ़ में रहता था, 2तब हनानी नाम मेरा एक भाई और यहूदा से आए हुए कई एक पुरुष आए; तब मैने उनसे उन बचे हुए यहूदियों के विषय जो बंधुआई से छुट गए थे, और यरूशलेम के विषय में पूछा। 3उन्होने मुझसे कहा, जो बचे हुए लोग बंधुआई से छुटकर उस प्रांत में रहते है, वे बड़ी दुर्दशा में पड़े हैं, और उनकी निंदा होती है; क्योंकि यरूशलेम की शहरपनाह टूटी हुई, और उसके फाटक

जले हुए हैं। [4]ये बाते सुनते ही मैं बैठकर रोने लगा और कितने दिन तक विलाप करता; और स्वर्ग के परमेश्वर के सम्मुख उपवास करता ओर यह कहकर प्रार्थना करता रहा।

नहेम्याह 2:12
तब मैं थोड़े पुरुषों को लेकर रात को उठा; मैंने किसी को नही बताया कि मेरे परमेश्वर ने यरूशलेम के हित के लिए मेरे मन में क्या उपजाया था। और अपनी सवारी के पशु को छोड़ कोई पशु मेरे संग न था।

संभवतः नहेम्याह के समय अन्य कई लोग थे जिन्होंने यरूशलेम की दशा के विषय में सुना था, परंतु नहेम्याह ने जब नगर की दीवारों के विनाश के विषय में सुना, तब उसके अंदर खलबली मच गई। उसके अंदर कुछ हलचल मच गई जिसने उसे शहर की दीवारों को पुनः बनाने पर विवश किया।

नहेम्याह ने पहचाना कि इस हलचल या सरगर्मी को परमेश्वर ने उसके हृदय में डाला है।

प्रायः, हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर का निर्देश हमारे हृदयों में एक असामान्य, निरंतर और गहरी हलचल या सरगर्मी के द्वारा आता है।

किसी बात के विषय में भावूक हो उठने से यह सरगर्मी अधिक होती है। भावनात्मक हलचल मौसम के समान होती है – वह बदलती है और मिट जाती है। परंतु स्वर्ग से आने वाली खलबली गहरी होती है। वह स्थायी होती है, वह बार बार लौटकर आती है और व्यक्ति को कार्य करने पर मज़बूर करती है!

प्रेरितों के काम 17: 16,17
[16]जब पौलुस अथेने में उनकी बाट जोह रहा था, तो नगर को मूरतों से भरा हुआ देखकर उसका जी जल गया। [17]इसलिए वह आराधनालय में यहूदियों और भक्तों से और चौक में जो लोग मिलते थे, उनसे हर दिन वाद–विवाद किया करता था।

प्रेरितों के काम 18:5

जब सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से आए, तो पौलुस वचन सुनाने की धुन में लगकर यहूदियों को गवाही देता था कि यीशु ही मसीह है।

हृदय की विभिन्न "भीतरी भावनाओं" पर ध्यान दें जिनमें खलबली, उकसाए जाने और विवश किए जाने का एहसास होता है। इस प्रकार की हृदय की अन्दरूनी भावनाएं परमेश्वर के हृदय में प्रगट होती हैं – जब आप उसे महसूस करते हैं जो वह महसूस करता है, जब आप स्वर्ग के स्पंदन को महसूस करते हैं और कार्यप्रवण हो जाते हैं।

2.4 परमेश्वर द्वारा आपको जो अनुग्रह दिया गया है उसे पहचानें

2.4.1 नए नियम में 'अनुग्रह' शब्द दर्शाता है

2.4.1.1 ईश्वरीय अनुग्रह

इफिसियों 2:8

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है।

2.4.1.2 ईश्वरीय चरित्र

2 पतरस 3:18

परंतु हमारे प्रभु, और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ।

2.4.1.3 ईश्वरीय समर्थता

इफिसियों 4:7

परंतु हममें से हर एक को मसीह के दान के परिमाण से अनुग्रह मिला है।

एक ही वरदान के विभिन्न परिमाण हो सकते हैं।

रोमियों 12:4–6

[4]क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं, [5]वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं। [6]और जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न–भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे।

- आपके जीवन के वरदान आपको दिए गए अनुग्रह के दर्शक हैं।
- जो वरदान परमेश्वर ने आपको दिए हैं, उनके अनुसार मसीह की देह में कार्य करने हेतु परमेश्वर ने आपको बनाया है।
- परमेश्वर के "वरदान और बुलाहट" एक साथ होते हैं (रोमियों 11:29)। जब आपके पास वरदान होते हैं, तब आप जानते हैं कि आपको उस विशेष कार्य को करने के लिए बुलाया गया है।
- सभी वरदान 'आत्मिक' नहीं होते।

इफिसियों 3:1,7,8

[1]इसी कारण मैं पौलुस जो तुम अन्यजातियों के लिए मसीह यीशु का बन्धुआ हूं। [7]और मैं परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के अनुसार, जो उसकी सामर्थ के प्रभाव के अनुसार मुझे दिया गया, उस सुसमाचार का सेवक बना। [8]मुझ पर जो सब पवित्र लोगों में से छोटे से भी छोटा हूं, यह अनुग्रह हुआ कि मैं अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊं।

- परमेश्वर का अनुग्रह हमेशा आपको किसी बात के लिए दिया जाता है – विशिष्ट उद्देश्य को पूरा करने हेतु। उदाहरण के लिए, बीमारों, बुजुर्गों या बच्चों की सेवा के लिए।

- परमेश्वर ने आपको जिन बातों के लिए अनुग्रह दिया है, उनमें आप देखेंगे कि परमेश्वर की सामर्थ आपके जीवन में प्रभावी रूप से कार्य करती है।

इफिसियों 4:7—11

[7]परंतु हममें से हर एक को मसीह के दान के परिमाण से अनुग्रह मिला है। [8]इसलिए वह कहता है कि वह ऊंचे पर चढ़ा, और बन्धुवाई को बान्ध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए। [9](उसके चढ़ने से और क्या पाया जाता है, केवल यह, कि वह पृथ्वी की निचली जगहों में उतरा भी था। [10]और जो उतर गया, यह वही है जो सारे आकाश से ऊपर चढ़ भी गया कि सब कुछ परिपूर्ण करे)। [11]और उसने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया।

कुछ लोगों को विशेष पदों/सेवकाइयों के लिए बुलाया गया है।

आपको दिए गए परमेश्वर के अनुग्रह को पहचानें।

आपके अनुग्रह के वरदान आपके जीवन के लिए परमेश्वर की सामर्थ और उसके उद्देश्य को प्रगट करते हैं।

जिस तरह से आपको बनाया गया है, उससे यह मालूम होता है कि आपको किसलिए बनाया गया : परमेश्वर के अनुग्रह के वरदानों का पोषण करने, उन्हें बढ़ाने और परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने की ज़रूरत है।

2.4.2 अनुग्रह और कार्य

1 कुरिन्थियों 15:10

परन्तु मैं जो कुछ भी हूं, परमेश्वर के अनुग्रह से हूं; और उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं हुआ; परन्तु मैंने उन सबसे बढ़कर

परिश्रम भी कियाः तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था।

2.5 परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई को पहचानें

रोमियों 8:14–16

[14]इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही
परमेश्वर के पुत्र हैं, [15]क्योंकि तुमको दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि
फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे
अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं। [16]आत्मा आप ही हमारी आत्मा के
साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।

यूहन्ना 16:13–15

[13]"परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का
मार्ग बताएगा; क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ
सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। [14]वह मेरी
महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। [15]जो
कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिए मैंने कहा कि वह मेरी बातों
में से लेकर तुम्हें बताएगा।

1 कुरिन्थियों 2:9,10

[9]परन्तु जैसा लिखा है कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं
सुनी, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी, वे ही हैं जो परमेश्वर
ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं। [10]परन्तु परमेश्वर ने
उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया; क्योंकि आत्मा सब
बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है।

यूहन्ना 3:8

"हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहां से आती है और किधर जाती है। जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।"

2.5.1 पवित्र आत्मा हमसे किस प्रकार बातें करता है?

- वह हमारी आत्माओं के साथ गवाही देता है।
- लिखित/बोले गए वचन को हमारे लिए संजीवित करता है।
- कल्पनाएं, विचार और चित्र
- स्वप्न और दर्शन
- भवि यद्वाणी के वचन

2.5.2 हम कैसे जान सकते हैं कि पवित्र आत्मा बोल रहा है

जब पवित्र आत्मा बोलता है, तब वह हमेशा यीशु को महिमा करता है। यह इस बात को जानने कि उत्तम कसौटी है कि जो कुछ आप सुन रहे हैं, वह सचमुच परमेश्वर की ओर से है या आप अपनी भावनाओं में बोल रहे हैं।

2.6 परिस्थितियों को पहचानें

2 इतिहास 16:9

देख, यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिये फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में वह अपना सामर्थ दिखाए। तू ने यह काम मूर्खता से किया है, इसलिये अब से तू लड़ाइयों में फंसा रहेगा।

भजन 37:23,24

23मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है, और उसके चलन से वह प्रसन्न रहता है; 24चाहे वह गिरे तौभी पड़ा न रह जाएगा, क्योंकि यहोवा उसका हाथ थांभे रहता है।

- परमेश्वर परिस्थियों को उत्पन्न करता है ताकि आप और मैं उसके प्रति प्रतिसाद दें।

- परमेश्वर हमारे जीवनों में परिस्थितियों और घटनाओं का प्रबंध करता है, जो हमारे लिए उसकी योजना और उद्देश्य के अनुसार होते हैं।
- परमेश्वर अपने मार्ग में चलने हेतु आपकी सहायता करने के लिए लोगों, स्थानों और अन्य बातों को रखता है।
- परिस्थितियों को पहचानें और अपनी प्रतिक्रिया दें।
- परमेश्वर जिस परिस्थितियों की आपके जीवन में योजना करता है, उनमें से हर एक सरल या मनभावनी (मधुर) नहीं होती, परंतु उसका मूल्य हमेशा स्थायी होता है। उदाहरण के लिए, आलस्य को दूर करने वाली परिस्थितियां; पैसों का कैसे बुद्धिमानी के साथ उपयोग करें यह सिखाने वाली परिस्थितियां, परिस्थितियां जो धीरज आदि को उत्पन्न करती हैं।

इब्रानियों 12:5–11

**5और तुम उस उपदेश को जो तुमको पुत्रों के समान दिया जाता है, भूल
गए हो, कि हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान, और
जब वह तुझे घुड़के तो हियाव न छोड़। 6क्योंकि प्रभु, जिससे प्रेम करता
है, उसकी ताड़ना भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको
कोड़े भी लगाता है। 7तुम दुख को ताड़ना समझकर सह लो। परमेश्वर
तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है। वह कौन सा पुत्र है,
जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता? 8यदि वह ताड़ना जिसके भागी सब
होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान
ठहरे! 9फिर जबकि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते
थे, तो क्या हम आत्माओं के पिता के और भी आधीन न रहें, जिससे
जीवित रहें। 10वे तो अपनी अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिए
ताड़ना करते थे, परंतु यह तो हमारे लाभ के लिए करता है, कि हम भी
उसकी पवित्रता के भागी हो जाएं। 11और वर्तमान में हर प्रकार की
ताड़ना आनन्द की नहीं, परंतु शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी
जो उसको सहते सहते पक्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का
प्रतिफल मिलता है।**

व्यवस्था विवरण 8:1–10

**1जो जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूं उन सभी पर चलने की चौकसी
करना, इसलिये तुम जीवित रहो और बढ़ते रहो, और जिस देश के
विषय में यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाई है उसमें जाकर उसके
अधिकारी हो जाओ। 2और स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा उन
चालीस वर्षों में तुझे सारे जंगल के मार्ग में से इसलिये ले आया है, कि
वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा करके यह जान ले कि तेरे मन में
क्या क्या है, और कि तू उसकी आज्ञाओं का पालन करेगा वा नहीं।
3उसने तुझको नम्र बनाया, और भूखा भी होने दिया, फिर वह मन्ना,
जिसे न तू और न तेरे पुरखा ही जानते थे, वही तुझको खिलाया;
इसलिये कि वह तुझको सिखाए कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीवित
रहता, परन्तु जो जो वचन यहोवा के मुंह से निकलते हैं उन ही से वह
जीवित रहता है। 4इन चालीस वर्षों में तेरे वस्त्र पुराने न हुए, और तेरे
तन से भी नहीं गिरे, और न तेरे पांव फूले। 5फिर अपने मन में यह तो
विचार कर, कि जैसा कोई अपने बेटे को ताड़ना देता है वैसे ही तेरा
परमेश्वर यहोवा तुझको ताड़ना देता है। 6इसलिये अपने परमेश्वर
यहोवा की आज्ञाओं का पालन करते हुए उसके मार्गो पर चलना, और
उसका भय मानते रहना। 7क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे एक उत्तम
देश में लिये जा रहा है, जो जल की नदियों का, और तराइयों और
पहाड़ो से निकले हुए गहिरे गहिरे सोतों का देश है। 8फिर वह गेहू, जौ,
दाखलताओं, जंजीरों, और अनारों का देश हैं; और तेलवाली जलपाई
और मधु का भी देश है। 9उस देश में अन्न की महंगी न होगी, और न
उसमें तुझे किसी पदार्थ की घटी होगी; वहां के पत्थर लोहे के हैं, और
वहां के पहाडों में से तू तांबा खोदकर निकाल सकेगा। 10और तू पेट
भर खाएगा, और उस उत्तम देश के कारण जो तेरा परमेश्वर यहोवा
तुझे देगा उसका धन्य मानेगा।**

- जिस परिस्थितियों का आप सामना करते हैं, उनमें से हर एक परमेश्वर की ओर से नहीं होती। कुछ आपके अपने कामों का फल होती हैं, कुछ दूसरों के कार्यों का और कुछ

शैतान द्वारा उत्पन्न की जाती हैं। आपको परिस्थितियों को पहचानने की आवश्यकता है।

- आप चाहे जिस बुरी परिस्थिति का सामना करें, उसे परमेश्वर फिर बदल सकता है ताकि आपके जीवन के लिए उसके उद्देश्य में आगे बढ़ने हेतु वह आपकी सहायता कर सके। उदाहरण के लिए, यूसुफ (उत्पत्ति 37:50:15)।
- परिस्थितियों को जानें या पहचानें और उचित कदम बढ़ाएं। नीतिवचन 4:26 में लिखा है, "अपने पांव धरने के लिये मार्ग को समथर कर, और तेरे सब मार्ग ठीक रहें।"

2.7 ईश्वरीय परामर्श और बुद्धिमानी को पहचानें

- परामर्श सलाह, निर्देश, आपको दिया गया ज्ञान है।
- परामर्श आदेश नहीं है।
- ईश्वरीय परामर्श वह सलाह है जो ऐसे किसी स्त्री या पुरुष द्वारा दी जाती है – जो परमेश्वर के साथ गहरा, मज़बूत, दृढ़, परखा हुआ रिश्ता रखता है – उनके ज्ञान और अनुभव के आधार पर।

उदाहरण:

1 कुरिन्थियों 7:10–14; 25–28 (10, 12 और 25 पर ध्यान दें)

**10जिनका विवाह हो गया है, उनको मैं नहीं, वरन् प्रभु आज्ञा देता है कि
पत्नी अपने पति से अलग न हो; 11(और यदि अलग भी हो जाए, तो बिन
दूसरा विवाह किए रहे; या अपने पति से फिर मेल कर ले) और न पति
अपनी पत्नी को छोड़े। 12दूसरों से प्रभु नहीं, परन्तु मैं ही कहता हूं कि
यदि किसी भाई की पत्नी विश्वास न रखती हो, और उसके साथ रहने
से प्रसन्न हो, तो वह उसे न छोड़े। 13और जिस स्त्री का पति विश्वास
न रखता हो, और उसके साथ रहने से प्रसन्न हो; वह पति को न छोड़े।
14क्योंकि ऐसा पति जो विश्वास न रखता हो, वह पत्नी के कारण पवित्र**

ठहरता है, और ऐसी पत्नी जो विश्वास नहीं रखती, पति के कारण पवित्र ठहरती है; नहीं तो तुम्हारे लड़केबाले अशुद्ध होते, परन्तु अब तो पवित्र हैं।
[25]कुंवारियों के विषय में प्रभु की कोई आज्ञा मुझे नहीं मिली, परन्तु विश्वासयोग्य होने के लिए जैसी दया प्रभु ने मुझे पर की है, उसी के अनुसार सम्मति देता हूं।
[26]इसलिए मेरी समझ में यह अच्छा है, कि आजकल क्लेश के कारण मनुष्य जैसा है, वैसा ही रहे।
[27]यदि तेरी पत्नी है, तो उससे अलग होने का यत्न न कर; और यदि तेरी पत्नी नहीं, तो पत्नी की खोज न कर;
[28]परन्तु यदि तू विवाह भी करे, तो पाप नहीं; और यदि कुंवारी ब्याही जाए तो कोई पाप नहीं; परन्तु ऐसों को शारीरिक दुख होगा, और मैं बचाना चाहता हूं।

- परामर्श पाने की कीमत।

नीतिवचन 5:23
वह शिक्षा प्राप्त किए बिना मर जाएगा, और अपनी ही मूर्खता के कारण भटकता रहेगा।

नीतिवचन 10:17
जो शिक्षा पर चलता वह जीवन के मार्ग पर है, परन्तु जो डांट से मुंह मोड़ता, वह भटकता है।

नीतिवचन 11:14
जहां बुध्दि की युक्ति नहीं, वहां प्रजा विपत्ति में पड़ती है; परन्तु सम्मति देनेवालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है।

नीतिवचन 15:22
बिना सम्मति की कल्पनाएं निष्फल हुआ करती हैं, परन्तु बहुत से मंत्रियों की सम्मति से बात ठहरती है।

नीतिवचन 20:18
सब कल्पनाएं सम्मति ही से स्थिर होती हैं; और युक्ति के साथ युध्द करना चाहिये।

नीतिवचन 24:6
इसलिये जब तू युद्ध करे, तब युक्ति के साथ करना, विजय बहुत से मन्त्रियों के द्वारा प्राप्त होती है।

- परमेश्वर धर्मी लोगों की सलाह का उपयोग करता है जिन्हें उसने आपके जीवन में रखा है ताकि आपके जीवन के लिए उसकी योजना और उद्देश्य में आपकी अगुवाई करने में आपकी सहायता कर सके।
- नम्र होकर परामर्श को स्वीकार करें।

उदाहरणः मूसा और इथ्रो (निर्गमन 18:13—27)।

तीन प्रकार के परामर्शः

2.7.1 व्यक्ति के अपने ज्ञान और अनुभव पर आधारित परामर्श

- आप किससे सलाह या परामर्श पाते हैं इस विषय में सावधान रहें।

भजन 1:1
क्या ही धन्य है वह पुरूष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्टा करनेवालों की मण्डली में बैठता है!

2.7.2 परमेश्वर के लिखित वचन पर आधारित परामर्श

2.7.3 भविष्यात्मक प्रेरणा पर आधारित परामर्श

- पहली और तीसरी ज़रूरत है कि उस परामर्श को परखा जाए, जांचा जाए और समझाया जाए।
- भविष्यद्वक्ता द्वारा कही गई हर बात भविष्यात्मक नहीं होती।

1 इतिहास 17:1–5

[1]जब दाऊद अपने भवन में रहने लगा, तब दाऊद ने नातान नबी से कहा, देख, मैं तो देवदारु बने हुए घर में रहता हूं, परंतु यहोवा की वाचा का सन्दूर तम्बू में रहता है। [2]नातान ने दाऊद से कहा, जो कुछ तेरे मन में हो उसे कर, क्योंकि परमेश्वर तेरे संग है। [3]उसी दिन रात को परमेश्वर का यह वचन नातान के पास पहुंचा, जाकर मेरे दास दाऊद से कह [4]यहोवा यों कहता है, कि मेरे निवास के लिये तू घर बनवाने न पाएगा। [5]क्योंकि जिस दिन से मैं इस्राएलियों को मिस्र से ले आया, आज के दिन तक मैं कभी घर में नहीं रहा; परंतु एक तम्बू से दूसरे तम्बू को और एक निवास से दूसरे निवास को आया जाया करता हूं।

2.8 समयों और ऋतुओं को पहचानें

- परमेश्वर के पास एक दिनदर्शिका है। उसके पास एक समय–सारणी है। वह अपनी दिनदर्शिका के अनुसार कार्य करता है।
- परमेश्वर जिन कामों को करता है उनके लिए उसके पास नियुक्त समय और ऋतु होते हैं।

  उत्पत्ति 3:15 – **"और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा!" 4000 वर्ष!**

  गलातियों 4:4 – **"और अपने कान सत्य से फेरकर कथा–कहानियों पर लगाएंगे।"**

- आपके जीवन के लिए परमेश्वर के पास समय और ऋतुएं हैं।

भजन 31:15

मेरे दिन तेरे हाथ में है; तू मुझे मेरे शत्रुओं और मेरे सतानेवालों के हाथ से छुड़ा।

सभोपदेशक 3:1,11

[1]हर एक बात का एक अवसर और प्रत्येक काम का, जो आकाश के नीचे होता है, एक समय है। [11]उसने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने अपने समय पर वे सुंदर होते हैं; फिर उसने मनुष्यों के मन में अनादी–अनंत काल का ज्ञान उत्पन्न किया है, तौभी जो काम परमेश्वर ने किया है, वह आदि से अन्त तक मनुष्य बूझ नहीं सकता।

सभोपदेशक 8:5,6

[5]जो आज्ञा को मानता है, वह जोखिम से बचेगा, और बुद्धिमान का मन समय और न्याय का भेद जानता है। [6]क्योंकि हर एक विषय का समय और नियम होता है, यद्यपि मनुष्य का दुःख उसके लिये बहुत भारी होता है।

- हर ऋतु का अपना नियुक्त कारण होता है।
- जिस जीवन में हम हैं उसके ऋतुओं को जब हम पहचानते हैं, तब परमेश्वर के उद्देश्यों को पहचानना आसान हो जाता है।

1 इतिहास 12:32

और इस्साकारियों में से जो समय को पहचानते थे, कि इस्राएल को क्या करना उचित है, उनके प्रधान दो सौ थे; और उनके सब भाई उनकी आज्ञा में रहते थे।

समयों और अवसरों को पहचानें

- इस समय आप जिस ऋतु में हैं उसके लिए परमेश्वर के नियुक्त उद्देश्य को पूरा करें। तब वह आपको जीवन के अगले अवसरों में ले जाएगा।

उदाहरण:

- बुनियाद डालने की ऋतु

इसमें निम्नलिखित बातें शामिल हैं :

- खोदना, रचना नहीं।
- चमक नहीं, केवल परिश्रम।
- तालियां नहीं, केवल दर्शक।

उद्देश्य :

- मज़बूत बुनियाद
- गहरी बुनियाद
- ऐसी बुनियाद जो आपको फैलने की अनुमति देगी

- सुरंग का समय

जब आप सुरंग से जाते हैं, तब एक ही रास्ता होता है, आगे बढ़ने का। न तो आप बाए मुड़ सकते हैं, न दाहिने, और न ही पीछे जा सकते हैं। वहां अन्धःकार होता है। आपके पास केवल एक ही रोशनी होती है, अपनी 'आंखों पर विश्वास' करना। वहां हिलाने के लिए पहाड़ नहीं होते। बाहर निकलने का एक ही रास्ता होता है – उसमे से गुज़रना। विश्वासयोग्य रहें!

- मात्र पर्याप्त की ऋतु विपरीत भरपूरी, बहुतायत, कटनी का ऋतु
- दुख और सदमे की ऋतु
- परीक्षाओं और चुनौतियों की ऋतु
- मातृत्व की ऋतु

दूसरा व्यक्ति जीवन के जिस ऋतु में होता है, उस ऋतु का आदर करना हमें सीखना है।

2.9 परमेश्वर का कार्य करने का तरीका पहचानें

परमेश्वर को उदाहरण, नमूने और प्रतिमानों को तैयार करने की आदत है, ताकि हम उनका अनुसरण करें। मेरा मानना है कि हमारे जीवनों में कार्य का नमूना तैयार करता है।

1 तीमुथियुस 1:15,16

[15]तू जानता है कि आसियावाले सब मुझ से फिर गए हैं, जिनमें फूगिलुस और हिरमुगिनेस हैं। [16]उनेसिफुरुस के घराने पर प्रभु दया करे, क्योंकि उसने बहुत बार मेरे जी को ठंडा किया, और मेरी जंजीरों से लज्जित न हुआ।

हम अब्राहम के विश्वास के कदमों पर चलते हैं।

रोमियों 4:11,12

[11]और उसने खतने का चिन्ह पाया कि उस विश्वास की धार्मिकता पर छाप हो जाए, जो उसने बिना खतने की दशा में रखा था, जिससे वह उन सब का पिता ठहरे, जो बिना खतने की दशा में विश्वास करते हैं, और कि वे भी धर्मी ठहरें। [12]और उन खतना किए हुओं का पिता हो, जो न केवल खतना किए हुए हैं, परन्तु हमारे पिता इब्राहीम के उस विश्वास की लीक पर भी चलते हैं, जो उसने बिन खतने की दशा में किया था।

अन्य लोगों के जीवन हमारे लिए उदाहरण स्वरूप रखे गए हैं।

याकूब 5:10,11

[10]हे भाइयो, जिन भविष्यद्वक्ताओं ने प्रभु के नाम से बातें कीं, उन्हें दुख उठाने और धीरज धरने का एक आदर्श समझो। [11]देखो, हम धीरज धरनेवालों को धन्य कहते हैं। तुमने अय्यूब के धीरज के विषय में तो सुना ही है, और प्रभु की ओर से जो उसका प्रतिफल हुआ उसे भी जान लिया है, जिससे प्रभु की अत्यन्त करुणा और दया प्रगट होती है।

1 कुरिन्थियों 10:5,11

[5]परन्तु परमेश्वर उनमें के बहुतेरों से प्रसन्न न हुआ, इसलिए वे जंगल में ढेर हो गए। [11]परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ी, दृष्टान्त की रीति पर थी; और वे हमारी चेतावनी के लिए जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं, लिखी गईं हैं।

3

परमेश्वर की तैयारी की प्रक्रिया पहचानना

परमेश्वर धीरे–धीरे उन्हें तैयार करता है, जिन्हें वह उपयोग करता है।

3.1 तैयारी की प्रक्रिया के द्वारा परमेश्वर क्या तैयारी करना चाहता है?

2 तीमुथियुस 2:19–21

[19]तौभी परमेश्वर की पक्की नेव बनी रहती है, और उस पर यह छाप लगी है कि प्रभु अपनों को पहचानता है; और जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचा रहे। [20]बड़े घर में न केवल सोने–चान्दी ही के, परंतु काठ और मिट्टी के बर्तन भी होते हैं, कोई कोई आदर, और कोई कोई अनादर के लिए। [21]यदि कोई अपने आपको इनसे शुद्ध करेगा, तो वह आदर का बर्तन, और पवित्र ठहरेगा; और स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिए तैयार होगा।

- परमेश्वर आपको आदर (यूनानी में, मूल्य, कीमत, सम्मान) का पात्र (यूनानी में, हथियार या साधन) बनाना चाहता है।
- परमेश्वर चाहता है कि आप पवित्र (यूनानी में,शुद्ध, पवित्र किए गए) बनें, उसके लिए अलग किए गए।
- परमेश्वर चाहता है कि आप स्वामी के उपयोग के लिए योग्य (यूनानी में, उपयोगी, लाभदायक, लायक) बनें।
- परमेश्वर चाहता है कि आप हर भले काम के लिए तैयार किए जाएं (यूनानी में,तैयार किए गए), उसके लिए अलग किए जाएं।

परमेश्वर की तैयारी की प्रक्रिया अखंडित है। जीवन के हर पहलू में, वह आपको अगले चरण के लिए तैयार करता है।

तैयारी की प्रक्रिया के द्वारा हमें परमेश्वर के साथ सहयोग देना और कार्य करना सीखना है।

पवित्र शास्त्र से उदाहरण :

मूसा (प्रेरितों के काम 7:20–34)

- परमेश्वर ने अलौकिक रीति से मूसा के लिए यह प्रबंध किया कि उसे फिरौन के महल में सिखाया और प्रशिक्षित किया जाए। मूसा के जीवन में यह परमेश्वर के 'आत्मिक मुकद्दर का बीज' था (प्रेरितों के काम 7:22)। स्वर्गीय उद्देश्य के लिए यह मूसा की प्रारंभिक तैयारी और अपना स्थान लेना था।
- 40 वर्ष की उम्र में मूसा अपने ईश्वरीय उद्देश्य को पहचानने लगा। परंतु उसने एक गलती की। उसने उसे अपने तरीके से पूरा करने की कोशिश की।
- जितनी बार हम अपनी योग्यता में कुछ करने का प्रयास करते हैं, हम परमेश्वर की योजना के प्रगट होने में विलम्ब कर देते हैं। मूसा ने स्वयं ही उसे पूरा करने की कोशिश की और उसमें 40 वर्षों का विलम्ब लग गया!
- मूसा को जंगल में 40 लम्बे वर्ष बिताने पड़े (प्रेरितों के काम 7:29–30; निर्गमन 2:15,23), केवल इसलिए क्योंकि उसे उस राजा के मरने का इन्तज़ार करना पड़ा जिसे उसने क्रोधित किया था।

अस्सी वर्ष की उम्र में मूसा ने अपने ईश्वरीय मिशन को आरम्भ किया।

- अगले 40 वर्षों के लिए, वह अपने जीवन के उद्देश्य को कार्यान्वित करने लगा।

दाऊद

- दाऊद जब एक नवयुवक था, तब उसे राजा बनने के लिए अभिषेक किया गया। हम यह मानकर चलें कि उस समय वह सत्रह वर्षा का था।
- उसने अपना प्रारंभिक प्रशिक्षण तब पाया जब वह अपने पिता की भेड़ों की रखवाली किया करता था। इसी समय के दौरान उसने संगीत में कुशलता हासिल की होगी, शेर और भालू को मारा होगा, और इस्राएल लोगों के मध्य ख्याति प्राप्त की होगी।
- जब उसने गोलियत को मारा और राष्ट्रीय वीर बन गया, तब उसे प्रारंभिक सफलता मिली।
- लेकिन समय बदल गया और जब राजा शाऊल ने उसे मार डालने का फैसला किया, तब उसे अपनी जान बचाकर भागना पड़ा। अगले पांच छः वर्षों में दाऊद को खाना बदोश (1 शमूएल 22:1,2) के समान जीवन बिताना पड़ा। जिस व्यक्ति ने राजा बनने के लिए अभिषेक पाया था, उसने अधिकतर समय गुफाओं में बिताया!
- परंतु इसी समय के दौरान परमेश्वर ने ऐसे लोगों को भेजा जो दाऊद के साथ जा मिले और बाद में उसकी सामर्थी सेना में महत्वपूर्ण कप्तान बने!
- जब दाऊद 23 वर्ष का था, तब वह यहूदा का राजा बना (2 शमूएल 2:1–4)।
- जब अन्ततः दाऊद संपूर्ण इस्राएल और यहूदा का राजा बना, तब वह 30 वर्ष का था (2 शमूएल 5:4,5)। उसने 33 वर्षों तक राजा बन कर राज्य किया।
- तेरह वर्षों की तैयारी – उस समय से जब भविष्यद्वक्ता शमूएल ने उसे 'बुलाया', उस बुलाहट में कदम बढ़ाने के लिए जब उसे 'नियुक्त किया गया' उस समय तक।

पौलुस

- दमिश्क के मार्ग प्रभु यीशु मसीह से उसकी भेंट के समय पौलुस की उम्र करीब 33 वर्ष की होगी। उसे प्रशिक्षित होने में कई वर्ष लग गए।
- प्रभु यीशु से उसकी भेंट के समय, प्रभु ने प्रकट किया कि उसकी बुलाहट अन्य जातियों के लिए ज्योति है, वह विश्वास का प्रेरित है।
- पौलुस ने आरंभ में दमिश्क और अरब में तीन वर्ष बिताए (गलतियों 1:16,17; प्रेरितों के नाम 9:19–25)। लोगों ने दमिश्क में उसकी हत्या करने की कोशिश की और इसलिए वह अरब को भाग गया और बाद में लौट आया। इसी समय के दौरान सुसमाचार का अधिकतर प्रकाशन उसने पाया होगा जिसका वह प्रचार करता था।
- इसके बाद पन्द्रह दिनों तक वह यरूशलेम में भेंट देता रहा (गलतियों 1:18; प्रेरितों के काम 9:26–30), इस समय के दौरान उसने बड़े हियाव के साथ प्रचार किया। परंतु फिर एक बार लोगों ने उसे मारने की कोशिश की और तर्शिश को चल पड़ा। उसने तर्शिश, सिरिया और सिलिशिया में करीब 13 वर्ष बिताए (गलतियों 1:21–24; 2:1)।
- इन तेरह वर्षों के अंत में, बर्नबास तर्शिश को आया और वह शाऊल को अपने साथ अंताकिया ले गया (प्रेरितों के काम 11:25,26)।
- उसके बाद पौलुस ने अंताकिया की कलीसिया में प्रचार करते हुए उसने एक पूरा साल बिता दिया।
- इस वर्ष के अंत में, पौलुस ने बर्नबास के साथ यरूशलेम की दूसरी यात्रा की। इस यात्रा का उद्देश्य अकाल के दौरान सहायता

पहुंचाना था (प्रेरितों के काम 11:29,30)। इसलिए वह 14 वर्ष के अंतराल के बाद यरूशलेम को जाता है (गलतियों 2:1)।

- दमिश्क के मार्ग पर प्रभु से भेंट के समय से अब तक 17 वर्ष बीत चुके थे। पौलुस इस समय 50 वर्ष का होगा।
- पौलुस के मसीह जीवन और परमेश्वर के साथ चाल के प्रथम 17 वर्षों के विषय में कुछ भी नहीं लिखा गया है। अर्थात हम जानते हैं कि पौलुस ने इस समय प्रचार किया और शिक्षा दी। हम जानते हैं कि उसने परमेश्वर के रहस्यों का प्रकाशन और समझ प्राप्त की परंतु जो कुछ उसने किया और प्रचार किया उस विषय में कुछ विशेष नहीं लिखा गया है। इन्हें पौलुस के जीवन के 'खामोशी के वर्ष' कहा गया है। यहूदा धर्म के अंतर्गत उसकी पूर्व शिक्षा के अलावा, ये वर्ष भी उसके प्रशिक्षण के वर्ष रहे।
- अंत में, प्रेरितों के काम 13 में, 17 वर्षों के बाद, पौलुस को बर्नबास के साथ उसकी पहली मिशनरी यात्रा में बुलाया गया है (प्रेरितों के काम 13:1–4)।
- प्रेरितों के काम 14:14 में, पौलुस को बर्नबास के साथ पहली बार प्रेरित करके सम्बोधित किया गया है।

प्रभु के साथ उसकी भेंट के 17 वर्षों बाद पौलुस ने प्रेरिताई में प्रवेश किया। प्रेरित पौलुस को भी सत्रह वर्षों की तैयारी और प्रशिक्षण की आवश्यकता थी!! परमेश्वर जल्दबाजी में नहीं है।

जब आप परमेश्वर की तैयारी की प्रक्रिया से होकर गुज़रेंगे, आप अपने जीवनों में छिपे हुए गुणों, वरदानों और बुलाहटों को देख पाएंगे।

मत्ती 10:26,27

26 इसलिए उनसे मत डरना क्योंकि कुछ ढंका नहीं, जो प्रकट न किया जाएगा; और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा। 27 जो मैं तुमसे अन्धियारे में कहता हूं, उसे उजियाले में कहो; और जो कानों–कान सुनते हो, उसे कोठों पर से प्रचार करो।

लूका 6:40
चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं, परन्तु जो कोई सिद्ध होगा, वह अपने गुरु के समान होगा।

परमेश्वर आपको जिस तैयारी में से लेकर जाता है, उसके द्वारा :

- ईश्वरीय चरित्र
- सभी क्षेत्रों में परिपक्वता

3.1.1 ईश्वरीय चरित्र

2 तीमुथियुस 2:19–21
[19]तौभी परमेश्वर की पक्की नेव बनी रहती है, और उस पर यह छाप लगी है कि प्रभु अपनों को पहचानता है; और जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचा रहे। [20]बड़े घर में न केवल सोने–चान्दी ही के, परंतु काठ और मिट्टी के बर्तन भी होते हैं, कोई कोई आदर, और कोई कोई अनादर के लिए। [21]यदि कोई अपने आपको इनसे शुद्ध करेगा, तो वह आदर का बर्तन, और पवित्र ठहरेगा; और स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिए तैयार होगा।

मत्ती 9:17
और नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरते, क्योंकि ऐसा करने से मशकें फट जाती हैं, और दाखरस बह जाता है और मशकें नाश हो जाती हैं। परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरते हैं, और वह दोनों बची रहती हैं।

- परमेश्वर हमारे वरदानों से अधिक हमारे चरित्र में रुचि रखता है।
- आपका वरदान आपको वहां ले जा सकता है जहां पर आपका चरित्र आपको नहीं रखता।
- आपका चरित्र वह बुनियाद है जिस पर आपका जीवन रचा जाता है।

- वरदान और अभिषेक स्वर्ग से दिए जाते हैं, परंतु चरित्र का निर्माण पृथ्वी पर होता है।

भजन 51:6

देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है; और मेरे मन ही में ज्ञान सिखाएगा।

- सही बात कहने और सही कामों को करने से अधिक मसीही जीवन में बहुत कुछ है। परमेश्वर ईश्वरीय चरित्र की खोज में है।

3.1.2 सभी बातों में परिपक्वता

इफिसियों 4:11–16

**11और उसने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को
भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले
नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके
दे दिया, 12जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया
जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए, 13जब तक कि हम सब के सब
विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएं, और एक
सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं।
14ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग–विद्या और
चतुराई से उनके भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक बयार
से उछाले, और इधर–उधर घुमाए जाते हों, 15वरन् प्रेम से सच्चाई से
चलते हुए, सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएं।
16जिससे सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और
एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिमाण
से उसमें होता है, अपने आप को बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती
जाए।**

- परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत जीवन में परिपक्वता। सभी बातों में आज्ञाकारिता।

- लोगों के साथ हमारे रिश्तों में परिपक्वता।
- वरदानों और बुलाहटों में परिपक्वता।

मत्ती 10:16,17

[16]देखो, मैं तुम्हें भेड़ों के समान भेड़ियों के बीच में भेजता हूं। इसलिए सांपों के समान बुद्धिमान और कबूतरों के समान भोले बनो। [17]परन्तु लोगों से सावधान रहो, क्योंकि वे तुम्हें महासभाओं में सौपेंगे, और अपनी पंचायतों में तुम्हें कोड़े मारेंगे।

- ईश्वरीय चरित्र और परिपक्वता में आपकी उन्नति क्रमिक है।
- जितनी बार आप आज्ञाकारिता के नए क्षेत्र में – भक्तिमानता के नए स्तर में, परिपक्वता के नए स्तर में – कदम रखेंगे, आप अपने जीवन पर परमेश्वर के अभिषेक का नया स्तर पाएंगे।
- जिन बातों को आप आज सीखेंगे वे आपको कल के लिए तैयार करेंगी। परमेश्वर आपको अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए तैयार करेगा।

3.2 परमेश्वर हमें कैसे तैयार करता है?

3.2.1 वचन

2 तीमुथियुस 3:16,17

[16]हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। [17]ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।

3.2.2 पवित्र आत्मा

2 कुरिन्थियों 3:18

परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश कर के बदलते जाते हैं।

3.2.3 अन्य लोगों द्वारा

नीतिवचन 27:17

जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है।

- आप जिस प्रकार के काम करना चाहतें हैं, उस तरह के काम करने वाले लोगों के साथ संगति करें।

3.2.4 जीवन के अनुभव

- जीवन के भले और बुरे समय सीखने योग्य पाठ होते हैं।

रोमियों 5:3,4

[3]केवल यही नहीं, वरन् हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि
क्लेश से धीरज; [4]और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से
आशा उत्पन्न होती है।

याकूब 1:2–4

[2]हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, [3]तो इसको
पूरे आनन्द की बात समझो, यह जानकर कि तुम्हारे विश्वास के परखे
जाने से धीरज उत्पन्न होता है। [4]परंतु धीरज को अपना पूरा काम करने
दो कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुममें किसी बात की घटी न
रहे।

इब्रानियों 5:8,9

[8]और पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा–उठा कर आज्ञा माननी सीखी।
[9]और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिए सदा काल के
उद्धार का कारण हो गया।

- जीवन के अनुभव आपको ऐसे पाठ सिखाएंगे जिन्हें आप और कहीं सीख नहीं सकते।
- आप अनुभवी व्यक्ति को इन्कार नहीं कर सकते।

3.3 परमेश्वर की तैयारी की प्रक्रिया से गुज़रते समय समय ध्यान में रखने योग्य बातें

3.3.1 तैयारी की प्रक्रिया के दौरान हमें परमेश्वर के साथ सहयोग देने और कार्य करने के लिए तैयार रहना सीखना है

1 कुरिन्थियों 3:9

क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो।

3.3.2 आपका रवैया महत्वपूर्ण है

3.3.3 जहां सामर्थ है, वहां पर संगतता है

1 तीमुथियुस 4:15

उन बातों को सोचता रह और उन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह, ताकि तेरी उन्नति सब पर प्रगट हो। अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख।

3.3.4 जब आप छोटी बातों में विश्वासयोग्य रहेंगे, तब परमेश्वर आपको अगली बातों के लिए बढ़ौतरी देगा

मत्ती 25:23

उसके स्वामी ने उससे कहा, 'धन्य, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास! तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा; अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।

3.3.5 आत्मसंतोष से सावधान रहें। परमेश्वर को अनुमति दें कि वह आपको बढ़ाए।

फिलिप्पियों 3:12

यह मतलब नहीं कि मैं पा चुका हूं, या सिद्ध हो चुका हूं; परंतु उस पदार्थ को पकड़ने के लिए दौड़ा चला जाता हूं जिसके लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था।

3.3.6 तैयारी का समय कभी बरबाद नहीं होता। जितनी बड़ी बुलाहट होती है, उतनी ही बड़ी तैयारी की आवश्यकता होती है।

3.3.7 जल्दबाजी न करें। तैयारी का समय पूरा होने दे

नीतिवचन 21:5

कामकाजी की कल्पनाओं से केवल लाभ होता है, परन्तु उतावली करनेवाले को केवल घटती होती है।

उदाहरण : मूसा, दाऊद, पौलुस।

3.3.8 बुलाहट और वरदान के आपके क्षेत्र में रहें

परमेश्वर ने जो योजना नहीं बनाई है, वह बनने का प्रयास न करें।

4

उसके उद्देश्य को पूरा करने हेतु अपना स्थान लेना

हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने की प्रक्रिया का भाग है अपना स्थान ग्रहण करना, या स्थापन होना ताकि हम सही समय में सही स्थान में रहें।

'स्थापन होने' या अपना स्थान लेने का अर्थ परमेश्वर के प्रति संवेदनशील होना, सही समय में सही स्थान में रहना और सही कार्य करना सीखना है।

4.1 उसका उद्देश्य पूरा करने हेतु अपना स्थान लेना

एस्तेर 4:12–14

12एस्तेर की ये बातें मोर्दकै को सुनाई गईं। 13तब मोर्दकै ने एस्तेर के पास यह कहला भेजा, कि तू मन ही मन यह विचार न कर, कि मैं ही राजभवन में रहने के कारण बची रहूंगी। 14क्योंकि जो तू इस समय चुपचाप रहे, तो और किसी न किसी उपाय से यहूदियों का छुटकारा और उद्धार हो जाएगा, परंतु तू अपने पिता के घराने समेत नाश होगी। फिर क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिए राजपद मिल गया हो?

हमें सही समय में सही स्थान में रहना है ताकि जो परमेश्वर चाहता है, उसे करें।

4.2 उसका प्रयोजन पाने हेतु अपना स्थान लेना

1 राजा 17:1–9

1और तिश्बी एलिय्याह जो गिलाद के परदेशियों में था, उसने अहाब से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहता हूं,

उसके जीवन की शपथ इन वर्षों में मेरे बिना कहे, न तो मेह बरसेगा, और न ओस पड़ेगी। [2]तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा, [3]कि यहां से चलकर पूरब ओर मुख करके करीत नाम नाले में जो यरदन के सामने है छिप जा। [4]उसी नाले का पानी तू पिया कर, और मैंने कौओं को आज्ञा दी है कि वे तुझे खिलाएं। [5]यहोवा का यह वचन मानकर वह यरदन के सामने के करीत नाम नाले में जाकर छिपा रहा। [6]और सबेरे और सांझ को को वे उसके पास रोटी और मांस लाया करते थे और वह नाले का पानी पिया करता था। [7]कुछ दिनों के बाद उस देश में वर्षा न होने के कारण नाला सूख गया। [8]तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा, [9]कि चलकर सीदोन के सारपत नगर में जाकर वहीं रह : सुन, मैंने वहां की एक विधवा को तेरे खिलाने की आज्ञा दी है।

हमें सही समय में सही स्थान में रहना है ताकि हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर के प्रयोजन को ग्रहण कर सकें।

यदि हम खुद अपना स्थान नहीं लेते और परमेश्वर के प्रयोजन को खो देते हैं, तो हम परमेश्वर को दोष नहीं दे सकते।

4.3 सुरक्षा पाने हेतु अपना स्थान लेना

भजन 91

हे यहोवा परमेश्वर मैं अपने पूर्ण मन से तेरा धन्यवाद करूंगा; मैं तेरे सब आश्चर्य कर्मो का वर्णन करूंगा।

सबसे सुरक्षित स्थान परमेश्वर की इच्छा के मध्य है, उस कार्य को करें जो परमेश्वर चाहता है कि आप करें, उसी स्थान में रहना जहां परमेश्वर चाहता है कि आप रहें, और उस समय में जब परमेश्वर चाहता है कि आप करें।

4.4 उन्नति या बढ़ती पाने हेतु अपना स्थान लेना

2 शमुएल 2:1–4

**[1]इसके बाद दाऊद ने यहोवा से पूछा, कि क्या मैं यहूदा के किसी नगर
में जाऊं? यहोवा ने उससे कहा, हां जा। दाऊद ने फिर पूछा, किस नगर
में जाऊं? उसने कहा, हेब्रोन में। [2]तब दाऊद यिज्रेली अहीनोअम, और
कर्मेली नाबाल की स्त्री अबीगैल नाम, अपनी दोनों पत्नियों समेत वहां
गया। [3]और दाऊद अपने साथियों को भी एक एक के घराने समेत वहां
ले गया; और वे हेब्रोन के गावों में रहने लगे। [4]और यहूदी लोग गए,
और वहां दाऊद का अभिषेक किया कि वह यहूदा के घराने का राजा
हो।**

हमें उन्नति, बढ़ती और विकास पाने हेतु अपना स्थान लेना है जो परमेश्वर हमारे लिए चाहता है।

4.5 परमेश्वर की वर्तमान बेदारी में रहने हेतु अपना स्थान लेना

उदाहरण :

पीतल का सांप

निर्गमन 21:5–9

**[5]परंतु यदि वह दास दृढ़ता से कहे, कि मैं अपने स्वामी, और अपनी
पत्नी, और बालकों से प्रेम रखता हूं, इसलिए मैं स्वतंत्र होकर न चला
जाऊंगा; [6]तो उसका स्वामी उसको परमेश्वर के पास ले चले; फिर उसको
द्वार के किवाड़ वा बाजू के पास ले जाकर उसके कान में सुतारी से छेद
करें; तब वह सदा उसकी सेवा करता रहे। [7]यदि कोई अपनी बेटी को
दासी होने के लिये बेच डाले, तो वह दासी की नाईं बाहर न जाए। [8]यदि
उसका स्वामी उसको पत्नी बनाए, और फिर उस से प्रसन्न न रहे, तो वह
उसे दाम से छुड़ाई जाने दे; उसका विश्वासघात करने के बाद उसे
ऊपरी लोगों के हाथ बेचने का उसको अधिकार न होगा। [9]और यदि**

उसने उसे अपने बेटे को ब्याह दिया हो, तो उससे बेटी का सा व्यवहार करे।

2 राजा 18:4

उसने ऊंचे स्थान गिरा दिये, लाठों को तोड़ दिया, अशेरा को काट डाला। और पीतल का जो सांप मूसा ने बनाया था, उसको उसने इस कारण चूर चूर कर दिया, कि उन दिनों तक इस्राएली उसके लिये धूप जलाते थे; और उसने उसका नाम नहुशतान रखा।

मूसा

निर्गमन 17:1–6

[1]फिर इस्राएलियों की सारी मण्डली सीन नाम जंगल से निकल चली, और
यहोवा के आज्ञानुसार कूच करके रपीदीम में अपने डेरे खड़े किए; और
वहां उन लोगों को पीने का पानी न मिला। [2]इसलिये वे मूसा से
वादविवाद करके कहने लगे, कि हमें पीने का पानी दे। मूसा ने उनसे
कहा, तुम मुझसे क्यों वादविवाद करते हो? और यहोवा की परीक्षा क्यों
करते हो? [3]फिर वहां लोगों को पानी की प्यास लगी तब वे यह कहकर
मूसा पर बुड़बुड़ाने लगे, कि तू हमें लड़केबालों और पशुओं समेत
प्यासों मार डालने के लिये मिस्र से क्यों ले आया है? [4]तब मूसा ने यहोवा
की दोहाई दी, और कहा, इन लोगों से मैं क्या करूं? ये सब मुझे
पत्थरवाह करने को तैयार हैं। [5]यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएल के वृद्ध
लोगों में से कुछ को अपने साथ ले ले; और जिस लाठी से तू ने नील
नदी पर मारा था, उसे अपने हाथ में लेकर लोगों के आगे बढ़ चल।
[6]देख, मैं तेरे आगे चलकर होरेब पहाड़ की एक चट्टान पर खड़ा रहूंगा;
और तू उस चट्टान पर मारना, तब उसमें से पानी निकलेगा, जिससे ये
लोग पीएं। तब मूसा ने इस्राएल के वृद्ध लोगों के देखते वैसा ही किया।

गिनती 20:6–12

**6तब मूसा और हारून मण्डली के सामने से मिलापवाले तम्बू के द्वार पर
जाकर अपने मुंह के बल गिरे। और यहोवा का तेज उनको दिखाई
दिया। 7तब यहोवा ने मूसा से कहा, 8उस लाठी को ले, और तू अपने
भाई हारून समेत मण्डली को इकट्ठा करके उनके देखते उस चट्टान से
बातें कर, तब वह अपना जल देगी; इस प्रकार से तू चट्टान में से उनके
लिये जल निकाल कर मण्डली के लोगों और उनके पशुओं को पिला।
9यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने उसके सामने से लाठी को ले
लिया। 10और मूसा और हारून ने मण्डली को उस चट्टान के सामने इकट्ठा
किया, तब मूसा ने उससे कहा, हे दंगा करनेवालो, सुनो; क्या हम को
इस चट्टान में से तुम्हारे लिये जल निकालना होगा? 11तब मूसा ने हाथ
उठाकर लाठी चट्टान पर दो बार मारी; और उसमें से बहुत पानी फूट
निकला, और मण्डली के लोग अपने पशुओं समेत पीने लगे। 12परंतु
मूसा और हारून से यहोवा ने कहा, तुमने जो मुझ पर विश्वास नहीं
किया, और मुझे इस्राएलियों की दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया, इसलिये
तुम इस मण्डली को उस देश में पहुंचाने न पाओगे जिसे मैंने उन्हें दिया
है।**

यूहन्ना के शिष्य

यूहन्ना 1:36,37

**36और उसने यीशु पर जो जा रहा था दृष्टि करके कहा, "देखो, यह
परमेश्वर का मेम्ना है।" 37तब वे दोनों चेले उसकी यह सुनकर यीशु के
पीछे हो लिए।**

- स्थापन, स्थिति निर्धारण या अपना स्थान लेना भौगोलिक, सामाजिक, व्यावसायिक या संबंधपरक हो सकता है।
- स्थापन हमारे जीवनों के हर क्षेत्र में लागू होता है।

4.6 जब आप अपना स्थान लेते हैं, तब निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखें

- छोड़ देने के लिए तैयार रहें।

उदाहरण : लूत की पत्नी

- अज्ञात में कदम बढ़ाने के लिए तैयार रहें

इब्रानियों 11:8

विश्वास ही से इब्राहीम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया, जिसे मीरास में लेनेवाला था, और यह न जानता था कि मैं किधर जाता हूं; तौभी निकल गया।

- आप कैसे प्रवेश करते हैं, कैसे जाते हैं इस विषय में सावधान रहें।
- बदलाव के लिए तैयार रहें।
- आगे बढ़ने से पहले, उसके लिए तैयारी करें।
- कभी कभी परमेश्वर आपकी स्थिति निर्धारण करने हेतु दूसरों के कार्यों का उपयोग करेगा।

उदाहरण : यूसुफ

- युद्धनीतिक बनें। लक्ष्यहीन होकर भटकते न रहें।
- परमेश्वर आपकी गलतियों से बड़ा है। वह आपको उसकी इच्छा के अनुसार करने हेतु फिर स्थापन करेगा।

उदाहरण : मूसा और योना

5

ऊंची बुलाहट की कीमत

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने हेतु आपको कुछ कीमत चुकानी होगी।

लूका 14:27

और जो कोई अपना क्रूस न उठाए, और मेरे पीछे न आए, वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता।

गलातियों 6:14

परंतु ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं।

क्रूस

- यातना का स्थान है,
- अलगाव का स्थान है
- बलिदान का स्थान है

बलिदान – जिस पर आपका अधिकार है उस वस्तु को त्यागना

फिलिप्पियों 3:7

परन्तु जो जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैंने मसीह के कारण हानि समझ लिया है।

यूहन्ना 12:24–26

24मैं तुमसे सच सच कहता हूं, कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है; परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत

फल लाता है। [25]जो अपने प्राण को प्रिय जानता है वह उसे खो देता है; जो इस जगत मे अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह अनन्त जीवन के लिए उसकी रक्षा करेगा। [26]यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले; और जहां मैं हूं, वहां मेरा सेवक भी होगा; यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा।

आपके द्वारा किया गया हर बलिदान आपको परमेश्वर के राज्य के लिए और बड़ी लाभदायकता में ले जाएगा।

5.1 प्रति दिन के बलिदान

1 कुरिन्थियों 15:30—33

[30]और हम भी क्यों हर पल जोखिम में पड़े रहते हैं? [31]हे भाइयो, मुझे उस घमण्ड की सोंह जो हमारे मसीह यीशु में मैं तुम्हारे विषय में करता हूं, कि मैं प्रतिदिन मरता हूं। [32]यदि मैं मनुष्य की रीति पर इफिसुस में वन—पशुओं से लड़ा, तो मुझे क्या लाभ हुआ? यदि मुर्दे जिलाए नहीं जाएंगे, तो आओ, खाए—पीए, क्योंकि कल तो मर ही जाएंगे। [33]धोखा न खाना, बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।

प्रति दिन के बलिदान वे बातें हो सकती हैं, जैसे अनावश्यक बातों से खुद को दूर करना, अन्य लोग (आपके साथी) जिन कामों को करते हैं, उन्हें न करने का चुनाव करना, आदि।

1 कुरिन्थियों 9:24—27

[24]क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है? तुम वैसे ही दौड़ो, कि जीतो। [25]और हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है, वे तो एक मुरझानेवाले मुकुट को पाने के लिए यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिए करते हैं, जो मुरझाने का नहीं। [26]इसलिए मैं तो इसी रीति से दौड़ता हूं, परन्तु बेठिकाने नहीं, मैं भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूं, परन्तु उसके समान नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है। [27]परन्तु मैं अपनी देह

को मारता कूटता, और वश में लाता हूं; ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं।

रोमियों 12:1–2

[1]इसलिए हे भाइयो, मैं तुमसे परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ; यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। [2]और इस संसार के सदृश न बनो, परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।

5.2 जीवन बलिदान

उदाहरण : अब्राहम (उत्पत्ति 12:1), मूसा (इब्रानियों 11:24–26)

जीवन बलिदान वे मुख्य बलिदान हैं जो आप परमेश्वर के राज्य के लिए करते हैं।

उदाहरण : भौगोलिक दृष्टि से दूसरे स्थान में फिर जाकर बसना, नौकरी त्यागना, आदि।

5.3 आत्मा की अगुवाई में किए गए बलिदान और शारीरिक बलिदान

यूहन्ना 3:6

क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।

1 कुरिन्थियों 3:12–15

[12]और यदि कोई इस नेव पर सोना या चान्दी या बहुमोल पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखे, [13]तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा, क्योंकि वह दिन उसे बताएगा, इसलिए कि आग के साथ प्रगट होगा,

और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है? [14]जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा। [15]और यदि किसी का काम जल जाएगा, तो वह हानि उठाएगा; पर वह आप बच जाएगा, परन्तु जलते जलते।

रोमियों 12:1–2

[1]इसलिए हे भाइयो, मैं तुमसे परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ; यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। [2]और इस संसार के सदृश न बनो, परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।

- जो कीमत परमेश्वर चाहता है कि आप चुकाएं, वह ाायद दूसरों को चुकाना न पड़े।
- आनंद के साथ कीमत चुकाएं।

6

अपनी दौड़ पूरी करना

लूका 14:27–35

**[27]और जो कोई अपना क्रूस न उठाए, और मेरे पीछे न आए, वह भी मेरा
चेला नहीं हो सकता। [28]तुममें से कौन है कि गढ़ बनाना चाहता हो, और
पहले बैठकर खर्च न जोड़े, कि पूरा करने की सामर्थ मुझ में है या नहीं?
[29]कहीं ऐसा न हो, कि जब नेव डालकर तैयार न कर सके, तो सब
देखनेवाले यह कहकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगें, [30]कि यह मनुष्य बनाने
तो लगा, परंतु पूरा न कर सका? [31]या कौन ऐसा राजा है, जो दूसरे
राजा से युद्ध करने जाता हो, और पहले बैठकर विचार न कर ले कि
क्या मैं दस हजार लेकर उसका सामना कर सकता हूं, या नहीं, जो बीस
हजार लेकर मुझ पर चढ़ कर आता है? [32]नहीं तो उसके दूर रहते ही,
वह दूतों को भेजकर मिलाप करना चाहेगा। [33]इसी रीति से तुममें से जो
कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।
[34]नमक तो अच्छा है, परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह
किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? 35वह न तो भूमि के और न खाद
के लिए काम में आता है; उसे तो लोग बाहर फेंक देते हैं। जिसके
सुनने के कान हों वह सुन ले।"**

बेहतर शुरूवात करना ही काफी नहीं है, हमें अपनी दौड़ पूरी करने के लिए धीरज की भी आवश्यकता है।

6.1 नियोजन

हमें कीमत चुकाना है। इस प्रक्रिया का एक भाग है 'नियोजन या योजना बनाना।' नियोजन का मतलब है दूरदृष्टि रखना। यह आने वाली घटनाओं की प्रत्याशा है और बाद में तय करना है कि क्या किया जाए।

नीतिवचन 4:26

अपने पांव धरने के लिये मार्ग को समथर कर, और तेरे सब मार्ग ठीक रहें।

नीतिवचन 6:6–8

[6]हे आलसी, च्यूंटियों के पास जा; उनके काम पर ध्यान दे, और बुध्दिमान हो। [7]उनके न तो कोई न्यायी होता है, न प्रधान, और न प्रभुता करनेवाला, [8]तौभी वे अपना आहार धूपकाल में संचय करती हैं, और कटनी के समय अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं।

नीतिवचन 14:8–15

**[8]चतुर की बुध्दि अपनी चाल का जानना है, परन्तु मूर्खों की मूढ़ता छल
करना है। [9]मूढ़ लोग दोषी होने को ठट्ठा जानते हैं, परन्तु सीधे लोगों
के बीच अनुग्रह होता है। [10]मन अपना ही दुःख जानता है, और परदेशी
उसके आनन्द में हाथ नहीं डाल सकता। [11]दुष्टों का घर विनाश हो
जाता है, परन्तु सीधे लोगों के तम्बू में आबादी होती है। [12]ऐसा मार्ग है,
जो मनुष्य को ठीक देख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती
है। [13]हंसी के समय भी मन उदास होता है, और आनन्द के अन्त में शोक
होता है। [14]जिसका मन ईश्वर की ओर से हट जाता है, वह अपनी
चालचलन का फल भोगता है, परन्तु भला मनुष्य आप ही आप सन्तुष्ट
होता है। [15]भोला तो हर एक बात को सच मानता है, परन्तु चतुर मनुष्य
समझ बूझकर चलता है।**

नीतिवचन 22:3

चतुर मनुष्य विपत्ति को आते देखकर छिप जाता है; परन्तु भोले लोग आगे बढ़कर दण्ड भोगते हैं।

हमारे जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा क्या है इस ज्ञान के अनुसार हम योजना बनाते हैं। हम खुद को और अपनी योजनाओं को उसकी इच्छा के आगे समर्पित करते हैं।

2 कुरिन्थियों 1:15—17
15और इस भरोसे से मैं चाहता था कि पहले तुम्हारे पास आऊं, कि तुम्हें
एक और दान मिले। 16और तुम्हारे पास से होकर मकिदुनिया को जाऊं,
और फिर मकिदुनिया से तुम्हारे पास आऊं; और तुम मुझे यहूदिया की
ओर कुछ दूर तक पहुंचाओ। 17इसलिए मैंने जो यह इच्छा की थी तो
क्या मैं ने चंचलता दिखाई? या जो करना चाहता हूं क्या शरीर के
अनुसार करना चाहता हूं, कि मैं बात में हां, हां भी करूं।

हम शरीर के अनुसार योजना नहीं बनाते, परंतु आत्मा के अनुसार बनाते हैं।

हमें आत्मा द्वारा प्रेरित योजनाओं को बनाना और अमल में लाना है जो हमें अंतिम रेखा तक आगे बढ़ने में सहायक होंगे। परमेश्वर हमेशा हमारी बुद्धि, तर्क और विचार को हटाकर काम नहीं करता (यद्यपि कभी कभी वह ऐसा करता है)। परमेश्वर ही ने हमें बुद्धि, तर्क और विचार दिए हैं और जब हम अपने मनों को उसके हाथों में सौंपते हैं, तब वह उन विचारों/योजनाओं/कल्पनाओं/रणनीतियों को प्रेरित कर सकता है जो हमें उन योजनाओं में आगे बढ़ाती हैं जिनकी योजना उसने की है। समस्या यह है कि कभी कभी हम इतने अधिक "आत्मा में" बह जाते हैं कि हम उस माध्यम को अलग कर देते हैं जिसे उसने बनाया है, जिसे वह उपयोग करता है, अर्थात् हमारा मन/बुद्धि। या इसके विपरीत हमारे आधुनिकतम तरीके/साधन/तकनीकें आदि के साथ हम इतने अधिक 'शरीर में' चलने लगते हैं कि हम आत्मा क्या कह रहा है यह सुन ही नहीं पाते।

पास्टर जैक हेफोर्ड द्वारा लिखित 'आत्मा द्वारा प्रेरित नियोजन' पर टिप्पणियां

जब कभी वह हमें प्रेरित करता है कि हम अधिक आमदनी की अपेक्षा करें, हम उसके अनुसार प्रार्थना करते हैं। जब कभी हम कटौती करने की ज़रूरत महसूस करते हैं, हम बिना अपराधी महसूस किए ऐसा

करते हैं। "लक्ष्य" हम निर्धारित नहीं करते, इसलिए हमें उसे बचाने की आवश्यकता नहीं है। यह परमेश्वर का उद्‌देश्य है जो समय के साथ समझा जाता है।

जब शारीरिक आवेश आत्मिक लक्ष्य के साथ जुड जाता है, तब लोग और संस्थाओं का क्षय होने लगता है।

परमेश्वर की व्यवस्था में, कभी इस प्रकार निराशाजनक परिस्थिति उत्पन्न नहीं होती कि लोगों को कुचल दें या खराई की कीमत चुकाकर आर्थिक निवेदन का आग्रह किया जाए।

परंतु हमारी इच्छा 'जन्म की योजना बनाना' नहीं है, बल्कि "योजना को जन्म देना है।" दर्शन की परिकल्पना, योजनाओं की सगर्भता, और प्रसव के लिए गर्भधारण यह सब कुछ प्रार्थना की अदम्य आत्मा और अगुवाई करने हेतु पवित्र आत्मा पर पूर्ण निर्भरता के साथ अनुसरण किया जाता है – ताकि सुधार करें, समय तय करें, विश्वास को प्रेरित करें, संसाधनों को मुक्त करें, और उत्तर के लिए प्रोत्साहन दें।

- *हम पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के स्पष्ट एहसास के बगैर कोई ज़िम्मेदारी स्वीकार नहीं करेंगे, जिसकी पुष्टि प्राचीनों द्वारा की गई हो।*
- *हम प्रोन्नति या धन इकट्ठा करने वाले किसी भी साधनों का उपयोग नहीं करेंगे जो प्रभावी होने के लिए मनुष्य की प्रतिभा या शैली पर निर्भर हैं।*
- *हम ऐसे किसी भी बात का अनुसरण नहीं करेंगे जो आराधना, रिश्ता, शिष्यता और सेवकाई की प्राथमिकताओं को नज़रअन्दाज़ करता है।*
- *हम अत्यधिक, प्रायः, और हमेशा प्रार्थना करेंगे।*
- *हम परमेश्वर पर भरोसा करते हुए विचार करेंगे कि वह हम सभों को स्पष्टता, सुसंगति और कायिलियत प्रदान करे।*

- *यह जानते हुए कि "विश्वास के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है" हम विश्वास करेंगे। जब हम ऐसा करेंगे, तब वह अपने उद्देश्य को हम में बढ़ने देगा।*

6.2 अंतिम रेखा तक दौड़ना

इब्रानियों 12:1,2

[1]इस कारण जबकि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हमको घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु, और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें, [2]और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिसने उस आनन्द के लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा।

हमारी दौड़ को पूरा करने के लिए किस बात की आवश्यकता होगी?

अब मैं क्या कर सकता हूं जिससे मुझे यह आश्वासन प्राप्त हो कि मैं अन्तिम रेखा तक अपनी दौड पूरी करूंगा?

- हर बोझ को हटा कर रखें।
- उस पाप को हटाकर रखें जो हमें आसानी से बहकाता है।
- धीरज के साथ दौडें।
- यीशु की ओर देखें।

प्रेरित पौलुस

प्रेरितों के काम 20:22—24

[22]और अब देखो, मैं आत्मा में बन्धा हुआ यरूशलेम को जाता हूं, और नहीं जानता, कि वहां मुझ पर क्या क्या बीतेगा? [23]केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है, कि बन्धन और क्लेश तेरे लिए तैयार हैं। [24]परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझताः कि उसे प्रिय जानूं, वरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवकाई

को पूरी करूं, जो मैंने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिए प्रभु यीशु से पायी है।

प्रेरितों के काम 21:13

परन्तु पौलुस ने उत्तर दिया, "तुम क्या करते हो, कि रो रोकर मेरा मन तोड़ते हो; मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिए यरूशलेम में न केवल बान्धे जाने ही के लिए, वरन् मरने के लिए भी तैयार हूं।

पौलुस ने खुद के प्राण को प्रिय नहीं जाना, ताकि वह अपनी दौड को और उस सेवकाई को जो उसे सौंपी गई थी, पूरा कर सके।

2 तीमुथियुस 4:6–8

6क्योंकि अब मैं अर्घ के समान उंडेला जाता हूं, और मेरे कूच का समय आ पहुंचा है। 7मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है। 8भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे ही नहीं, वरन् उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के स्वप्न का अनुसरण करते हुए अपनी यात्रा का आनंद लें!

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट “ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर” के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव
अपनी बुलाहट से समझौता न करें
आशा न छोड़ें
परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना
परमेश्वर एक भला परमेश्वर है
परमेश्वर का वचन
सच्चाई
हमारा छुटकारा
समर्पण की सामर्थ
हम भिन्न हैं
कार्यस्थल पर महिलाएं
जागृति में कलीसिया
प्रत्येक काम का एक समय
आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान
पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना
अपने पास्टर की कैसे सहायता करें
कलह रहित जीवन जीना
एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है
परिशद्ध करने वाले की आग
व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्ध्नों को तोड़ना
आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना
राज्य का निर्माण करने वाले
खुला हुआ स्वर्ग
हम मसीह में कौन हैं
ईश्वरीय कृपा
परमेश्वर का राज्य
शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था
मन की जीत
जड़ पर कुल्हाडी रखना
परमेश्वर की उपस्थिति
काम के प्रति बाइबल का रवैया
ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा
अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ
प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ॲण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।
- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **"पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

नोट्स

परमेश्वर के पास हममें से हर एक के लिए योजना और उद्देश्य है। हमारे जीवनों के लिए उसके उद्देश्य को पूरा करने हेतु परमेश्वर के साथ सहयोग करें। इस अधययन द्वारा आपको यह सीखने मिलेगा कि कैसे आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानें और जो कुछ उसने आपके जीवन के लिए नियोजित किया है, उसे सफलतापूर्वक पूरा करने हेतु आपको क्या करने की ज़रूरत है।

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के स्वप्न को थाम लें! आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य (मकसद) को पूरा करने हेतु जीने से अधिक ऊंचा और बेहतर उद्देश्य और कोई नहीं है! उसकी स्वर्गीय बुलाहट का अनुसरण करने और उसे पूरा करने जैसा संतोष और किसी बात से प्राप्त नहीं हो सकता है। जिन बातों की योजना उसने आपके जीवन के लिए बनाई है, उन्हें पूरा करते हुए यीशु के साथ चलने से बड़ा साहस और कोई नहीं है।

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के स्वप्न का अनुसरण करते हुए अपनी यात्रा का आनंद लें!

आशीष रायचूर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org